कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड

सागर रत्न

सितंबर 2023

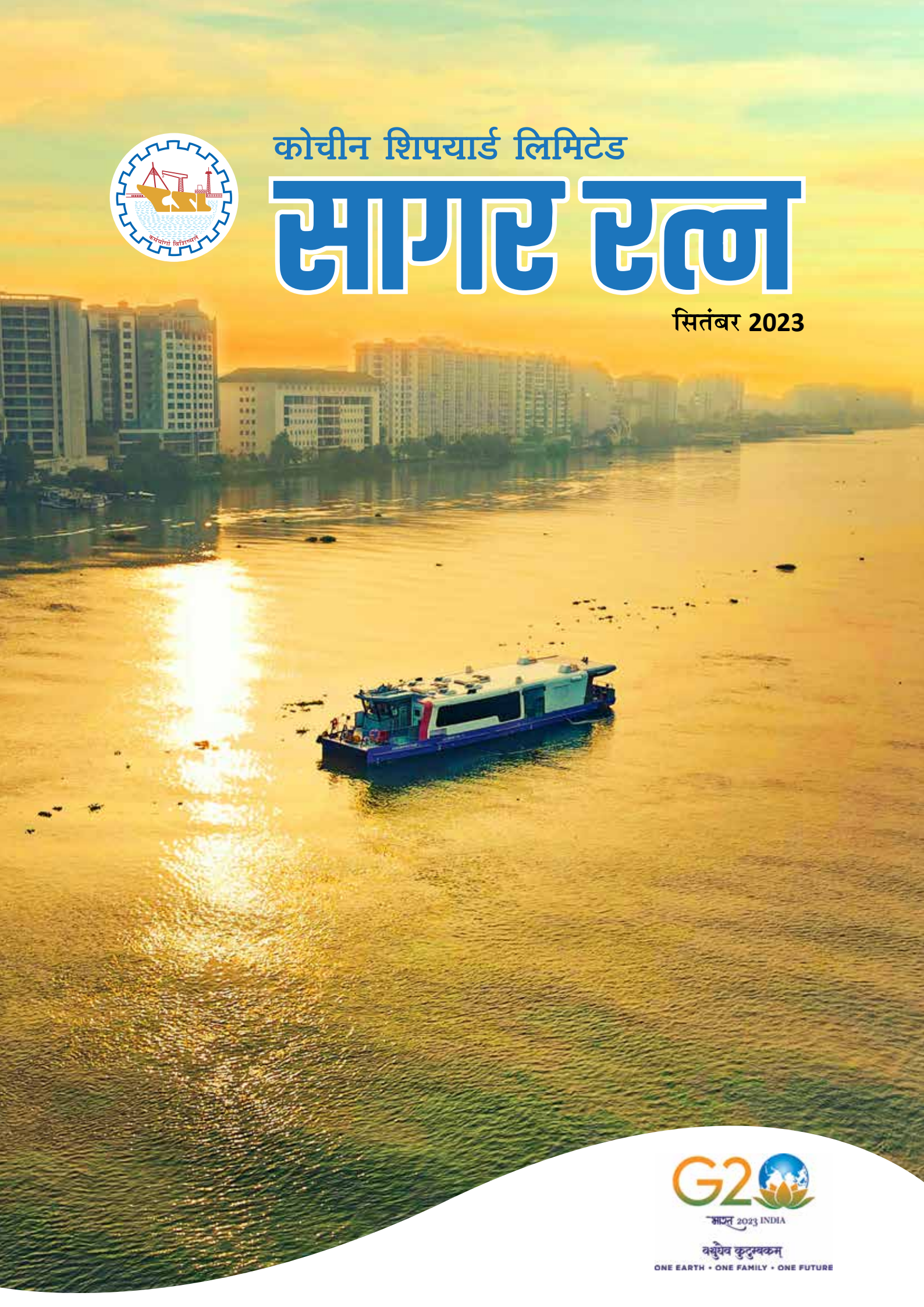

G20
भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

चेन्नई में जापान के महावाणिज्यदूत श्री टागा मासायुकी ने पोत निर्माण के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों और भारत के समुद्री क्षेत्र में योगदान के लिए सीएसएल के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री मधु एस नायर को जापान के महावाणिज्यदूत के प्रशंसा पत्र भेंट की।

सागर रत्न

15 वाँ अंक

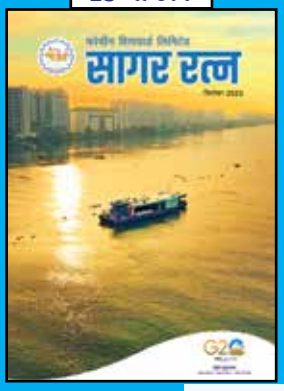

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड
भारत सरकार का उद्यम
(एक मिनिरत्न कंपनी, पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय)

अध्यक्ष की कलम से 2
अध्यक्ष, कोच्ची नराकास (पीएसयू) का संदेश 3
पुरस्कार 4
लेख 7
राजभाषा खबरें 39
कंपनी समाचार 56
प्रशासनिक शब्दावली 61
बोलचाल की हिंदी 62
चित्र रचनाएँ 64

संपादक मंडल

संरक्षक
श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादक
श्री सुबाष ए के, महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशिक्षण)

संपादक सदस्य
श्री पी एन संपत्त कुमार, सहायक महाप्रबंधक (प्रशासन)
श्रीमती सरिता जी, उप प्रबंधक (हिंदी)
श्रीमती लिजा जी एस, सहायक प्रशासनिक अधिकारी (हिंदी)
श्रीमती आतिरा आर एस, हिंदी टंकक

अध्यक्ष की कलम से.....

मुझे आपके समक्ष हमारी वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका **"सागर रत्न"** का 15वां संस्करण प्रस्तुत करते हुए खुशी हो रही है, जिसमें विशेष रूप से अपने कर्मचारियों के लेख, राजभाषा एवं कंपनी से जुडी हमारी गतिविधियों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। मुझे पूरा विश्वास है कि विषय और डिज़ाइन दोनों की दृष्टि में पत्रिका एक उन्नत स्तर में अपना स्थान ग्रहण कर चुकी है और इसके वाचन से आपके मन में मुख्य रूप से राजभाषा हिंदी के प्रति एक सकारात्मक मनोभाव सृजित होगा ।

कंपनी ने वित्तीय प्रदर्शन में उन्नति के संकेत देने शुरू कर दिए हैं। दुनिया भर के पोत मालिकों ने अपने महत्वपूर्ण आदेश देकर हम पर भरोसा जताया है। यह हमारे लिए सबसे आधुनिक और तकनीकी रूप से उन्नत पोत बनाकर उनकी उम्मीदों पर खरा उतरने का चुनौतीपूर्ण समय है।

मुझे इस अवसर पर आपको यह बताते हुए खुशी हो रही है कि भारत सरकार द्वारा कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को "अनुसूची बी" से "अनुसूची ए" सार्वजनिक उपक्रम में उन्नत किया गया है। यह सीएसएल के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो भारत का सबसे बड़ा पोत निर्माण और पोत मरम्मत सुविधा से सुसज्जित है। हरित नौवहन परिवर्तन की समुद्री दुनिया में, सीएसएल इस परिवर्तन का हिस्सा बनने हेतु उत्साहित है और आशा करता है कि "मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड" के अनुरूप हम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम होंगे।

कंपनी ने अखिल भारतीय स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज की है, इस सिलसिले में राजभाषा हिंदी को बढावा देने हेतु अपना उत्तरदायित्व और भी बढ गया है । कंपनी नई प्रौद्योगिकियों के जरिए एवं अपने कर्मचारियों की पूरी लगन से राजभाषा हिंदी को बढावा देने में ठोस कदम उठा रही है। इन सबके उपलक्ष्य में, रिपोर्टाधीन वर्ष में कोचीन शिपयार्ड को राजभाषा के उत्कृष्ठ कार्यान्वयन हेतु पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय से राजभाषा शील्ड और कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) से विविध राजभाषा पुरस्कारों से सम्मानित किया गया । मैं, इस अवसर पर, हिंदी अनुभाग को हार्दिक बधाइयां देना चाहता हूं, साथ ही राजभाषा हिंदी को अगले स्तर तक ले जाने हेतु उनके द्वारा उठाए जानेवाले हर सफल प्रयासों केलिए भी शुभकामनाएं देता हूं।

मधु एस नायर

मधु एस नायर

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

भारत संचार निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
प्रधान महाप्रबंधक का कार्यालय
बीएसएनएल भवन, कोच्चि-682016

सुरेंद्रन वी, आई टी एस
प्रधान महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष, नराकास उपक्रम कोच्चि

संदेश

बहुत हर्ष की बात है कि कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड की गृह पत्रिका **"सागर रत्न"** के पंद्रहवीं अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

पोत निर्माण के क्षेत्र में कोचीन शिपयार्ड का नाम स्वर्ण लिपियों में लिखी गई हैं। देश की उन्नति में कोचीन शिपयार्ड अहं भूमिका निभाती है, प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन कार्यों में कोचीन शिपयार्ड बहुत आगे है। कंपनी द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियम और नियम का अनुपालन शत प्रतिशत किया जा रहा है। बहुत ही गर्व की बात है कि कोचीन शिपयार्ड के प्रबंधन राजभाषा कार्यान्वयन कार्यों को बहुत महत्व देते आ रहे हैं। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उपक्रम कोच्चि के सदस्य कार्यालयों में कोचीन शिपयार्ड एक बहुत ही सक्रिय सदस्य है। शिपयार्ड की गृह पत्रिका "सागर रत्न" पिछले दो वर्षों से नराकास उपक्रम कोच्चि के अन्य सदस्य कार्यालयों की गृह पत्रिकाओं में प्रथम स्थान हासिल कर रहा है।

बहुत ही खुशी की बात है कि कोचीन शिपयार्ड को राजभाषा के क्षेत्र में बहुत उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं। गृह मंत्रालय द्वारा प्रदत्त राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और पिछले तीन वर्षों में पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय द्वारा प्रदत्त राजभाषा शील्ड प्राप्त हुए हैं। इस अवसर पर मैं कोचीन शिपयार्ड की तमाम टीम को बधाइयाँ देता हूँ। आगे भी कंपनी द्वारा मुख्य धारा और राजभाषा हिंदी में प्राप्त उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।
जय हिंद, जय हिंदी

वि सुरेन्द्रन

(सुरेंद्रन वी)

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय से

राजभाषा पुरस्कार

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को वर्ष 2016-2017 एवं 2017-2018 (द्वितीय पुरस्कार) और 2018-2019 (प्रथम पुरस्कार) के लिए 'ग' क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के सर्वोत्तम कार्यान्वयन हेतु पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय द्वारा राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया । पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के दिनांक 29 जुलाई 2023 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित पुनर्गठित हिंदी सलाहकार समिति की पहली बैठक में माननीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग एवं आयुष मंत्री श्री सर्बानंद सोणोवाल के करकमलों से श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, सीएसएल ने पुरस्कार ग्रहण किया ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कोच्ची से राजभाषा पुरस्कार

कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य संगठनों में 200 से ऊपर के कर्मचारीवाले सार्वजनिक उपक्रमों में वर्ष 2021-2022 के दौरान राजभाषा हिंदी के उत्तम निष्पादन केलिए कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को समिति की **राजभाषा शील्ड (प्रथम पुरस्कार)** प्राप्त हुई।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोच्ची से वर्ष 2021-2022 के दौरान राजभाषा गृह पत्रिका **'सागर रत्न'** केलिए **प्रथम पुरस्कार** हासिल किया ।

संयुक्त हिंदी पखवाडा समारोह के सिलसिले में आयोजित समाचार वाचन, कविता पाठ, अनुवाद, प्रशासनिक शब्दावली एवं टिप्पण, आशुभाषण, प्रश्नोत्तरी, सुलेख , सुगम संगीत और कविता रचना आदि प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों ने पुरस्कार प्राप्त किया। साथ ही **ऑवरॉल चैंपियनशिप** भी हासिल किया।

ग्रीष्मा बालू
समाचार वाचन-प्रथम/कविता पाठ-द्वितीय

सुमी एस
प्रशासनिक शब्दावली और टिप्पणी-प्रथम/अनुवाद-सांत्वना

अक्षता डी
आशुभाषण-प्रथम/कविता पाठ-सांत्वना

शारिका सी शशिधरन एवं अनुराज कुमार आई
प्रश्नोत्तरी – द्वितीय

निव्या नारायणन
सुलेख – द्वितीय

कार्तिका एस नायर
सुगम संगीत – द्वितीय

दिव्या एम पै
समाचार वाचन – द्वितीय

प्रदीप बी
सुलेख – तृतीय

हृष्ना पी एम
कविता रचना – सांत्वना

आर अरुण
आशुभाषण – सांत्वना

संपतकुमार पी एन
सहायक महाप्रबंधक

लेख

सूपर मार्केट में एक लड़की

सूपर मार्केट जहां मैं अक्सर जाया करता हूं, वहां हाल ही में मुझे जिज्ञासापूर्वक देख रही एक लड़की को देखा जो मेरा ध्यान आकर्षित करने के लिए उत्सुक थी ताकि वो सामान चुनने में मेरी मदद कर सकें। उसकी आँखों की चमक और आकर्षण ने मुझे उससे सहायता मांगने के लिए मजबूर किया।

यह सहज है। हम इन उत्सुक लड़कियों के वहां होने के कारण ही अक्सर इन सूपर मार्केट में जाया करते हैं। दूसरे शब्दों में, बिक्री कर्मियों के रवैये और दृष्टिकोण से आकर्षित होकर ही हम दूकानों का चयन करते हैं। दुकान का स्वामित्व या कीमत की सोच तो बाद में आती हैं।

लेकिन यहां मामला कुछ अलग था। मुझे लगा कि यह सुंदर लड़की मुझसे बात करना चाहती है। क्षमा करें – वह लड़की नहीं है। वह एक महिला है – उम्र करीब पैंतीस (35) साल।

इसके अलावा, मैं ऐसे क्षणों का भी आनंद लेता हूं जब अज्ञात लोग मुझसे संपर्क करते हैं और बिना कोई मतलब के विषयों पर बातचीत करते हैं। वैसे भी मेरे पास किसी को देने के लिए क्या रखा है। वो भी एक अनजान व्यक्ति को। लेकिन एक जोड़ी कान तो ज़रूर है जो उन्हें सब्र से सुन सकें। ज़्यादातर लोग बस इतना ही चाहते हैं – कोई उन्हें सुने। आज के इस नवीन युग में किसी को आपकी सलाह की ज़रूरत नहीं है। लोग सिर्फ बात करना चाहते हैं।

पुरुषों की तुलना में, मैं महिलाओं से बहुत जल्दी घुलमिल जाता हूं। अक्सर पुरुषों को अन्य पुरुषों पर भरोसा नहीं है। मेरे इस स्वभाव ने मुझे कभी-कभार मुश्किल में डाला है। पर वह एक अलग कहानी है, जिसका ज़िक्र और एक अवसर पर करूंगा।

सूपर मार्केट की लड़की ने मुझसे पिछले हफ्ते पहली बार बात की । जब मैं स्टेशनरी सेक्शन में कुछ वस्तुओं को खोज रहा था तो वह मेरे करीब आई और मुझसे पूछा :

"क्या आप वही व्यक्ति हैं जो सर्किल मैनर हॉल में कैंसर सोसाइटी के कार्यक्रम में भाग लिए थे? मुझे याद है कि मैंने आपको वहां देखा था" ।

मैंने प्रसिद्ध ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ गंगाधरन द्वारा आयोजित उस कार्यक्रम में भाग लिया था जो कैंसर सर्वाइवर्स और कई प्रसिद्ध व्यक्तियों का वार्षिक समारोह था।

मैंने कहा हां। "मैंने भाग लिया था"।

उसने कहा : " मैंने सोचा कि आप कोई प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे – कोई फिल्मी कलाकार !

"क्या मैं एक फिल्मी कलाकार की तरह दिखता हूं"? मैंने छेड़खानी करते हुए पूछा।

उसने मुस्कुराते हुए कहां "हां" । लेकिन उसने बाद में मेरे बारे में पूछताछ की और पता चला कि मैं कोई सेलिब्रिटी नहीं बल्कि एक सामान्य व्यक्ति हूं।

हमारी बातचीत को आगे बढाते हुए, यह सोचकर कि वे भी एक कैंसर से बची हुई व्यक्ति हैं मैंने उनसे पूछा कि "आप वहां किस वजह से आई थी" ।

"हम अपने बेटे को लेके आए थे। उसका इलाज चल रहा था" ।

दो साल की उम्र में उसके पेट में कैंसर का पता लगाया गया था। उसका इलाज तिरुवनंतपुरम के रीजनल कैंसर सेंटर में चल रहा था।

उसने कुछ सुधार का संकेत दिखाया लेकिन दुर्भाग्यवश यह उसकी रीढ़ तक फैलने लगा और उसका पैर लकवाग्रस्त हो गया और चलने में भी असमर्थ हो गया।

" हे भगवान " ।

" इस अवसर पर हमारी मुलाकात डॉ. गंगाधरन से हुई। आप जानते हैं कि हम चार साल के उपचार के अंत तक आते ही बुरी तरह से टूट चुके थे " ।

" फिर क्या हुआ "। मैं जानने के लिए बैचैन था।

डॉक्टर ने वास्तव में हमारे अभिजीत को वापस जीवित किया। दो साल के लगातार इलाज के बाद हालात बदलने लगा – वो चलने लगा।

" वाह यह तो बहुत अच्छी बात है, मैंने कहा "।

"उपचार से ज़्यादा, यह डॉक्टर का प्यार और स्नेह था, जो अभि को वापस लाया।" उसे अस्पताल का दौरा करने और प्रक्रियाओं से गुज़रने में बहुत खुशी थी।

आपको पता है, अभि डॉक्टर द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में गाता भी था।

" मुझे पता है कि डॉक्टर भी अच्छा गाते हैं और माउथ ऑर्गन बजाते हैं। मैंने उन्हें एक समारोह में बजाते हुए देखा था"। मैंने कहा।

फिर उन्होंने मुझे अपने बेटे के मंच प्रदर्शन की कुछ वीडियों और तस्वीरें दिखाई । जब एक ग्राहक ने कुछ खरीदने के लिए उनकी सहायता मांगी तब जाकर मुझे ख्याल आया कि मैं वाकई में भूल गया था कि मैं उनसे कितने समय से बात कर रहा हूं। लेकिन जाते समय मैंने उनसे पूछा " आपका नाम क्या है "?

" मंजू " उसने दूर से ही आवाज़ दी।

दिन गुज़र गए।

कल मैं उनसे फिर मिला। वह दौड़ती हुई मेरे पास आई। मैंने पूछा ..... " कैसी हो मंजू " ?

उसकी आंखें चमकने लगी। " यह पहली बार है जब कोई ग्राहक मुझे अपने नाम से पुकार रहा हो।" यह सच हो सकता है सेल्स गर्ल्स के लिए नाम नहीं होता।

" अभि कैसा है "? मैंने बातचीत को आगे बढाया।

" क्या मैंने आपको नहीं बताया ? वह अब नहीं रहा "।

मैं चौंक पड़ा । " कैसे " ?

" एक दुर्घटना में । दो साल पहले एक सड़क हादसा हुआ था। वह अपने पापा के साथ बैक पर सवार कर रहा था। तेज़ रफ्तार से ट्रक ने उन्हें टक्कर मार दी "।

मैं स्तब्ध रह गया । मुझे नहीं पता था कि उनसे क्या कहूं। बस बिना कुछ कहे मैंने अपना हाथ उनके कंधे पर रख दिया।

" यह कितने का है " ? एक ग्राहक की पूछताछ ने वापस मुझे होश में ला दिया। और वह पहले की तरह ग्राहक से बातचीत करने लगी।

जाते समय मैंने मंजू से पूछा..... अभि का कोई भाई या बहन है?

" हां सर। हमें एक लड़का और लड़की हैं। जुड़वा। अब वे एक साल के हो गए हैं "। उसने एक मुस्कान के साथ जवाब दिया।

मेरी आंखें नम हो गई थीं।

लेख

सूर्य समुंदर

सखीमोल पी एम
उच्च प्रशिक्षार्थी

डूबते सूरज में एक अजीब सी खूबसूरती है... वो जब सुबह के तपते धूप को बहुत ही प्रतापी तौर पर अपने में बटोरती है नहीं तो प्रकृति जब अपने में समेटते हुए सूर्यास्त के प्रत्योक्षकरण के लिए गवाही बनती है।

यह केवल एक प्रकृति वर्णन नहीं बल्कि उसके पार - समुंदर एक अनुभूति है।

हर दिन की तरह आज भी समुंदर और आकाश के मेल से सूर्योदय हुआ । वह एक छुट्टी का दिन था। इसलिए भीड़ होने की संभावना थी। सूर्योदय की प्रभा में समुंदर लाल रंग सा दीख पड़ता था। पूरा दिन अपनी रोशनी देने के बाद शाम को, फिर सुबह लौटने की प्रतीक्षा देते हुए अपने प्रियतम में समा जाता है।

सुबह होते - होते लोग समुंदर के किनारे में आने लगे... कितने चेहरे, कितनी वेश-भूषाएं.....। सभी के चेहरे पर एक छुट्टी का माहौल है। बच्चे अपने माता-पिता के हाथों को छुड़ाकर समुंदर की ओर भाग रहे हैं, प्यार करनेवाले हाथों में हाथ डालकर अपनी दुनिया में खोए हुए हैं.. सड़क पर सामान बेचनेवाले अपना व्यापार शुरू करने के लिए बेचैन है। तब तक सूर्य अपनी पूरी तेज से उबर चुका था जैसे एक सुनहरा ताल आकाश को घूर रहा हो।

हर शाम, समुंदर में डूबने वाला सूरज और उसे अपने में समेटनेवाला समुंदर। चौबीसों घंटे संग रहकर कहानी रचने वाले, प्यार न करते हुए भी प्यार करनेवाले सूरज और समुंदर से भी बड़ा सत्य तो इस दुनिया में हो ही नहीं सकता ।

इस प्रेम काव्य में आखिर तक मेरे लबों में सिर्फ ये ही पंक्तियां गुनगुनाते है...

इन..हवाओं और पंछियों से कहानियां कहो..

जंगली फूल से मज़ाक करके जिगर में तुम उतरो...

परछाई.. बनके धीरे-धीरे

करीब रहूं मैं.......

ऐसे ही जिंदगी की भाग-दौड़ में मिला एक छुट्टी का दिन..

धीरे-धीरे सूर्य अपने प्रियतम में लीन होने को तैयार हो रहा है।

लोग सूर्यास्त देखने के लिए उतावले हो रहे हैं। बच्चे भी एक छुट्टी का दिन समाप्त होने के दुख में हैं।

सूर्य धीरे-धीरे समुंदर में लीन होने लगा। रात के सूनेपन में फिर से समुंदर और सूर्य अकेला पड़ गया...।

यह वादा करते हुए कि सवेरे फिर से रोशनी देने के लिए आएगा.. उनकी यात्रा जारी है...।

कभी न खत्म होने वाली प्रेम कहानी !

इन सबका गवाही बनकर शांत किनारा भी...।

लेख

भारतीय नारी

हर्षा आनी मैकिल
उच्च प्रशिक्षार्थी

भारत में महिला होना आसान नहीं है। उन्हें अपने मूल मानव अधिकार के लिए संघर्ष करना पड़ता है, जो कि भारतीयों के मन में जड़ें जमा चुकी रूढ़िवादी मानसिकता के कारण उन्हें प्राप्त नहीं होता है। महिलाओं को एक तरफ मां के रूप में माना जाता है और दूसरी तरफ उन्हें एक वस्तु के रूप में प्रताड़ित किया जाता है। नारी ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है लेकिन वास्तविकता कुछ और ही है।

भारत हर पहलू में एक विविधतापूर्ण देश है, उसी तरह महिलाएं अपने पूरे जीवन में कठिनाइयों का विविध रूप मे सामना करती हैं। वे सबसे मजबूत व्यक्तित्व हैं और बेटी, बहन, पत्नी, मां या कभी दोस्त के रूप में उनके पास होना एक बड़ा आशीर्वाद है। लेकिन साधारण तथ्य भारत के

लोगों द्वारा पहचाना नहीं गया है। यह सारा अन्याय उसके जन्म के क्षण से शुरू हो जाता है। पहले उसके परिवार वाले उसके सारे अधिकार छीन लेते हैं फिर समाज फिर उसके ससुराल वाले और इसी तरह सूची आगे बढ़ती है।

यह कहा गया है कि यदि एक महिला शिक्षित हो जाती है और पूरी तरह से सक्षम हो जाती है, तो उसका घर और एक पूरा देश शिक्षित और सक्षम हो जाता है, और हम यह नहीं भूल सकते कि भारत को वास्तव में भारत माता कहा जता है। जैसा कि उसने युद्ध में लाखों लोगों के खून-खराबे को देखा और महसूस किया है और उन लोगों के लिए खुद को बलिदान कर दिया है जिन्हें वह प्यार करती है । यूं तो स्त्री होना एक वरदान है लेकिन लोग इसका दुरूपयोग कर इसे अभिशाप बना रहे हैं ।

भारतीयों को अभी भी अपने जीवन में एक महिला की उपस्थिति के महत्व को पहचानना है । जैसे-जैसे पीढ़ी बदल रही है और महिलाओं को क्षेत्रों में स्वीकार और मान्यता दी जाती है और लगातार लड़ाई के बाद उनके अधिकार दिए जाते है, क्या मैं पूछ सकती हूं कि हम उन चीजों के लिए क्यों लड़ रहे हैं जो पहले ही खत्म हो चुका हैं। मेरी बहनों, न तो पूछो और न ही लड़ो, बस कार्य करों या वैसे ही जिएं जैसे कि यह आपका है और केवल वही है जो मायने रखता है।

ग्रीष्मा बालू
सहायक प्रबंधक

लेख

क्या हम वाकई में इस शहर के अपशिष्ट प्रबंधन को संभालने के लिए तैयार हैं ?

ब्रह्मपुरम में कोचीन निगम की अपशिष्ट प्रबंधन सुविधा में एक बड़ी आग लगने के कारण कोच्ची के पूरे शहर में जहरीली गैस के बादल छाए हुए केवल कुछ ही सप्ताह हुए हैं। विश्व के प्रमुख शहरों के शहरीकरण में अपशिष्ट प्रबंधन हमेशा एक समस्या रही है, और इसलिए कुशल नगर नियोजन समिति की भूमिका आवश्यक है। ब्रह्मपुरम में जो कुछ हुआ, उसने कोच्ची के अपशिष्ट प्रबंधन में बड़ी कमियों को स्पष्ट रूप से उजागर कर दिया है । कुछ महीने बीतने के बाद भी, कोचीन निगम का प्रबंधन अभी तक निविदा प्रक्रिया और अपशिष्ट प्रबंधन की श्रृंखला में विभिन्न ज़िम्मेदारियों के आबंटन पर आम सहमति पर नहीं पहुंचा है। इस बिंदु से पीछे मुड़कर देखने पर, क्या किसी को भी लगता है कि हम वास्तव में अन्य शहरों के शहरीकरण की गति से आगे निकल गए हैं या क्या हमारे पास स्पष्ट रूप से एक उचित अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली की कमी है? एक विफल अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली के परिणामस्वरूप शहर की पूरी आबादी को मलिन वायु के संपर्क में लाना एक सामूहिक हत्याकांड के समान है।

विभिन्न प्राधिकरणों द्वारा इस दिशा में जारी किए गए नियमों का अध्ययन करने के लिए यह उचित समय है या कम से कम सही समय है। ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा दिनांक 08 अप्रैल 2016 को जारी किए गए थे, जिसने नगरीय ठोस अपशिष्ट (प्रबंधन व हथालन) नियम 2000 का स्थान लिया। ये नियम सभी शहरी स्थानीय निकायों पर लागू होते हैं जिनमें निगम और नगरपालिका भी शामिल हैं। नियमों के अनुसार घरों

सहित सभी अपशिष्ट उत्पादकों की प्रमुख ज़िम्मेदारियों में से एक बायोडिग्रेडेबल, गैर-बायोडिग्रेडेबल और स्वच्छता अपशिष्ट में उत्पन्न कचरे को अलग करना है। यह स्रोत स्तर पर ही कचरे की उचित छंटाई की सुविधा प्रदान करता है। मंत्रालय पूरे देश में इन नियमों की निगरानी और कार्यान्वयन सुनिश्चित करने हेतु भी ज़िम्मेदार है और जिला मजिस्ट्रेट अपने जिले में उचित ठोस अपशिष्ट प्रसंस्करण और निपटान सुविधा स्थापित करने के लिए ज़िम्मेदार है।

प्रत्येक राज्य में अपशिष्ट प्रबंधन पर एक राज्य नीति और रणनीति होनी चाहिए जिसमें अपशिष्ट में कमी, पुन:उपयोग, पुनर्प्राप्ति और ठोस अपशिष्ट के विभिन्न घटकों के इष्टतम उपयोग पर ज़ोर दिया जाए ताकि लैंडफिल में जाने वाले कचरे को कम से कम किया जा सके। नीति में अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली में अनौपचारिक अपशिष्ट संग्राहकों को एकीकृत करने हेतु दिशानिर्देश भी होने चाहिए। राज्य में शहरी विकास विभाग के सचिव का यह कर्तव्य है कि वह राज्य के नगर नियोजन विभाग को उचित ठोस अपशिष्ट प्रसंस्करण और निपटान सुविधाओं को सुनिश्चित करने हेतु निदेश दें। प्रसंस्करण और निपटान सुविधाओं के लिए उपयुक्त भूमि की पहचान करना और कचरे के पृथक्करण, भंडारण और प्रसंस्करण के लिए जगह की पहचान करना भी उनकी ज़िम्मेदारी है। वे प्रतिदिन पांच टन से अधिक के ठोस अपशिष्ट प्रसंस्करण और निपटान सुविधाओं के लिए बफर ज़ोन भी अधिसूचित करेंगे। कूड़ा बीनने वालों व कूड़ा व्यवसायियों के पंजीयन की योजना प्रारंभ की जाएगी। इन सभी नियमों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने हेतु केंद्रीय और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भी समान रूप से ज़िम्मेदार है। इन सभी नियमों को जानना आम आदमी के लिए ज़रूरी नहीं है।

अपशिष्ट प्रबंधन एक एकीकृत प्रक्रिया है। विभिन्न स्तरों पर विभिन्न इकाइयां हैं जिन्हें प्रणाली के समुचित कार्य को सुनिश्चित करने हेतु अपनी भूमिका सही ढंग से निभानी है। नियमों के अनुसार, कचरा उत्पन्न करने वाले को सड़कों, खुले सार्वजनिक स्थानों या नाली या जल निकायों में उत्पन्न ठोस अपशिष्ट को फेंकना, जलाना या दफनाना नहीं चाहिए। ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए अपशिष्ट उत्पादक स्थानीय प्राधिकरण को भी इस तरह के शुल्क का भुगतान करना होगा। यहां तक कि सड़क पर माल बेचने वालों से भी अपेक्षा की जाती है कि वे अपशिष्ट निस्तारण के लिए अलग डिब्बे रखें और उसका उचित निस्तारण सुनिश्चित करें। इसके अलावा, कपाट समुदाय जिनमें अपार्टमेंट और फ्लैट शामिल हैं, वे स्रोत पर कचरे का पृथक्करण सुनिश्चित करेंगे। उनके पास अपने परिसर के भीतर ही बायोडिग्रेडेबल कचरे के उपचार और निपटान की सुविधा भी होनी चाहिए।

यह कहते हुए कि, यदि हम अपशिष्ट प्रबंधन पदानुक्रम को देखते हैं, तो सर्वोच्च प्राथमिकता अपशिष्ट उत्पादन को रोकना है। वास्तव में अधिकांश ध्यान, कचरा उत्पन्न होने की रोकथाम पर जाना चाहिए, और यह अपशिष्ट प्रबंधन का सबसे अनसुलझा पहलू है। यह जागरूकता की कमी नहीं है जिसके कारण यह स्थिति पैदा हुई है। बढ़ा हुआ खर्च, उपभोक्तावाद और औद्योगीकरण सभी कारक हैं जिन्होंने उच्च अपशिष्ट उत्पादन में योगदान दिया है। घरों से उत्पन्न होने वाले कचरे की मात्रा इतनी अधिक होती है कि एक शहर में उत्पन्न होने वाले कचरे की संचयी मात्रा अधिकारियों को संभालने के लिए भारी पड़ सकती है। जब कोई आपदा होती है, तो भविष्य में इसी तरह की घटनाओं को रोकने के उपायों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। ब्रह्मपुरम की स्थिति में भी यही हो रहा है। इसकी रोकथाम और कमी की तुलना में अधिकारियों का ध्यान अपशिष्ट निस्तरण में बहुत दूर चला गया है।

कोच्ची इस प्रणाली के एक और व्यवधान को संभालने में सक्षम नहीं होगा। यह पहले से ही अपने संघर्षों और समस्याओं के साथ एक विशाल शहर है। यह सभी के लिए एक अध्ययन प्रक्रिया है। पूरी दुनिया हरित ऊर्जा, कम कार्बन पदचिन्ह और जीवन जीने के अधिक टिकाऊ तरीके की ओर बढ़ रही है, इसे हमारे लिए एक बेहतर भविष्य के लिए एक ऐसे भविष्य के लिए, जहां हम स्वच्छ हवा में सांस ले सकें वहां इसे एक जागरण का आह्वान बनने दें।

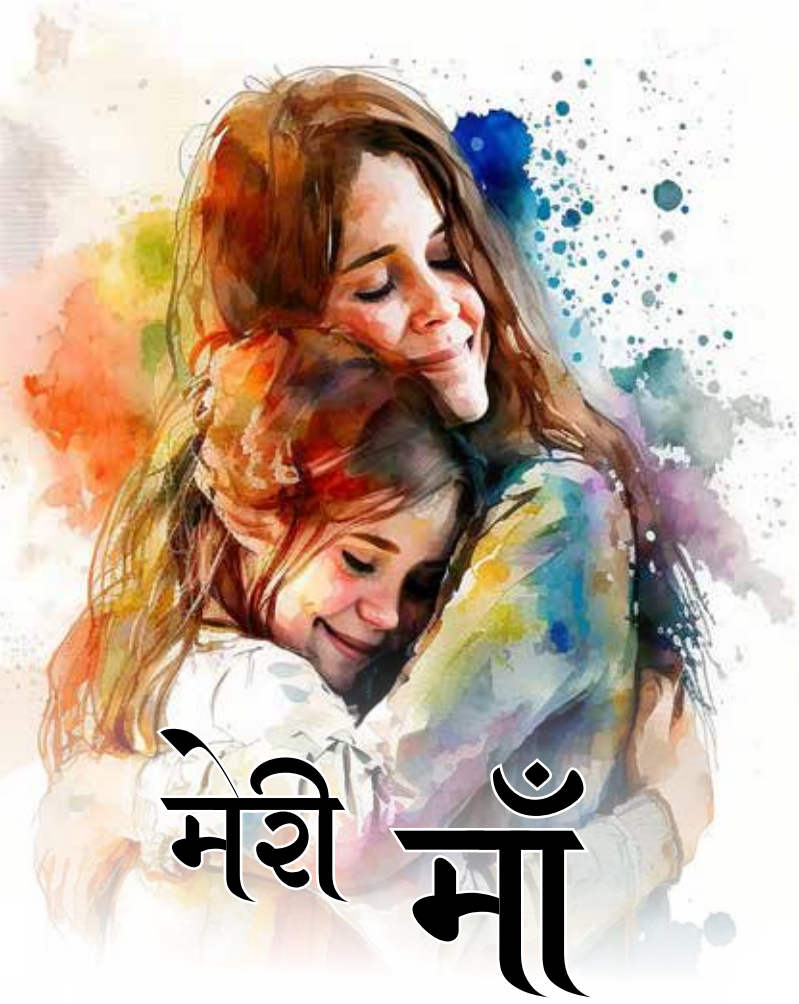

मेरी माँ

कविता

ग्रीष्मा ए आर
आउटफिट सहायक

सहन शीलता और त्याग का प्रतीक।
एक मां के रूप में,
एक दोस्त के रूप में,
जो साया बनकर है खड़ी ।।
जो मेरे बिना कहे,
मुझे जानती है ।
जो मेरे मन का दुख,
बिना बताए पहचानती है।
इक जादू की झप्पी से,
हर दुखों को दूर करने की
शक्ति रखती है ।।
माँ मतलब सब कुछ है,
जो तुम हो माँ....।।

कविता

विद्यालय

श्रीजित सोमन
आउटफिट सहायक

मेरी ज़ुबान पर,
आद्याक्षर की मिठास भरी
माँ ने दिया ज्ञान....।
ज्ञान के आँगन में,
मेरी माँ के साथ,
वो पहला दिन अभी भी
मेरी यादों को सहलाता है।।
बारिश से भीगा स्कूल का मैदान,
और ताजी मिट्टी का गंध,
अभी भी है मेरे दिल में ।
ज्ञान के झरोखों में
और नए अनुभव, शिक्षक, और दोस्त,
मेरे स्कूल के रूप में,
मेरे मन में आज भी,
बर्फ की बूंद के रूप में प्रकाशित है।।

चलना के एस
किरण टी राज की सुपत्नी

लेख

मैं सिर्फ एक जानवर हूं ना...

कुछ दिनों से अजीब सा महसूस हो रहा है । ऐसा लगता है कि कुछ होने वाला है। वैसे तो पेड़ों की शाखा तोड़ते समय वो विरोध करते थे। जब मैं उनके पास गया तो ऐसा लगा कि वे कुछ दुखी है। मुझे देखते ही चिड़ियाँ और गिलहरियाँ भाग दौड़ते और दूर जाकर कुछ न कुछ फुसफुसाते । दो दिन पहले एक घटना हुई थी। बहुत पहले मैंने उनके बेटे को निष्ठूरता से पैरों के नीचे कुचल दिया था। मैं बहुत समय से एक जामुन को तोडने की कोशिश कर रहा था। सूखा पड़ने के कारण खाने की कमी थी। वो बगल के पेड़ में बैठकर सब देख रहा होगा। उसने उधर की ऊंची शाखा से जामुन तोड़कर नीचे गिरा दिया। मालूम नहीं उसको इतनी जल्दी मुझसे प्यार कहाँ से आ गया। आठ और चार साल के दो बच्चे। आज कल उन्हें देखते ही पहले के जैसे न होकर बहुत प्यार से देखता रहता। पत्नी ने पूछा कि, "आप को क्या हुआ?" मुझे क्या बोलना, मालूम नहीं। कुछ न कुछ ठीक नहीं है। जहाँ भी जाऊं, प्यारा दोस्त चक्काकोंबन और परिवर कदम पे कदम साथ रहते है। हमेशा पत्नी कहती है, इस प्रकार चावल खाएंगे तो तबीयत खराब हो जाएंगी। लेकिन पहले से ही चावल मेरी कमज़ोरी है। छः साल पहले लोगों का निशाना मुझ पर पड़ा था। ईश्वर की कृपा से उस समय बच गया। हर बार बाज़ार तोड़कर खाते समय मन में ऐसा महसूस होता है कि मेरा अंतिम समय आ रहा है। लेकिन क्या करें! हम जहां पर रहते थे तुम लोंगों ने वहां पर रिसोर्ट और हॉमस्टे बनवाकर हमारा वासस्थान को ही छीन लिया। यह तो किसी को जानना भी नहीं है। भगवान का दिया हुआ टोली जैसे पेट को भरना है न, वह भरने के लिए बहुत मेहनत करना पड़ता है। सिर्फ मैं ही नहीं साथ में कई लोग है। मुझमें ताकत और धैर्य होने के कारण मानव के बीच जाकर भूख मिटा सकता हूँ। मुझ पर पटाके फेंकने और एयरगन चलाने वालों पर हमला करता हूँ। मेरा दोस्त चक्ककोंबन के बारे में कहें तो वो कटहल को देखते ही उस पर टूट पड़ता है। इसके अलावा वह बहुत ही मासूम है। वही वो खबर लेकर आया था। जंगली चिडियों से पता चला कि जैसे पालक्काड से हाथी को पकड़ा था वैसा ही मुझे भी पकड़ने वाला है। जैसे मैंने सोचा था वैसा होने वाला

है। जो कुछ लोगों ने मेरे साथ किया था वो किसी को नहीं जानना। सिर्फ मैंने जो किया है वही देखते है। क्या करें?! "मानव ही राजा है"। वो बोल सकता है हम तो गूंगे है। हमारे लिए बोलनेवाला कौन है। ये जानकर बच्चे रोने लगे। आप परेशान मत हो हनुमान जी एक रास्ता दिखाएंगे, ये कह कर चक्ककोंबन ने उन्हें दिलासा दिया। फिर परेशानियों से भरे दिन थे। ये खबर मिला कि कोई अंजान लोग जंगल पहुंच गए है। कभी भी कुछ भी हो सकता है। मैं, बच्चे, दोस्त और उसका परिवार प्रार्थना में थे। तभी चिड़ियां वो खबर लेकर आयी, कुछ अच्छे लोग हमारे लिए भी बोलने के लिए है। उन लोगों ने न्यायालय में केस देकर स्टे माँगा है। तभी पता चला की बोलने वालों में भी अच्छे लोग है। मेरी आयु को बचाने और बढ़ाने के लिए हनुमान जी की बहुत प्रशंसा की। लेकिन वो शांति और खुशी ज़्यादा दिन तक नहीं चला। मुझे यहाँ से दूसरे जंगल भेजने का आदेश आया। उन लोगों ने मुझे वहाँ से दूर किया उन्हें मैं पसंद नहीं था। हे भगवान! क्यों हमें जन्म दिया? मन में ऐसी घबराहट हो रही थी कि यहाँ पर कुछ अजीब सा होने वाला है। चक्ककोंबन के दोस्त हर समय मेरे साथ चलने लगे। आस-पास कोई अंजान व्यक्ति को देखे तो चिड़ियों को यह खबर पहुँचाने का आदेश दिया गया। सिर्फ उन लोगों को ही मैं पसंद था। उन लोगों को गलत भी नहीं कह सकता क्योंकि उन से मेरा व्यवहार ऐसा था।

ऐसा वो खबर आया। भयचकित हो गया। अंजान लोग गांव के हाथियों को लेकर आए। हर समय मेरे चारों ओर हाथी का भीड़ मुझे घेरकर चलने लगे। आँखें भर आयी। तब एक गोली चलने की आवाज़ आयी। सब डर गए। बार-बार गोली चलने की आवाज़ आयी। सब भाग गए। मेरा और चक्ककोंबन का परिवार अकेला रह गया। तुरंत मेरी गर्भवती पत्नी दर्द से चिल्लाने लगी। मैंने चक्ककोंबन से कहा,"अगर मैं यहाँ पर रहूँ तो सभी की ज़िंदगी खतरे में पड़ सकती है। तुम इन सब का ध्यान रखो मैं उनके पास जा रहा हूँ। इन लोगों को मेरा जीवन चाहिए, वो लोग गोली चलाकर पैदा होने वाले बच्चे और पत्नी को कुछ हो गया तो? मैं दूसरे रास्ते से जा रहा हूँ। "चक्ककोंबन ने मुझे रोका," जो भी हो तुम मत जाओ, हमें अकेला छोड़कर मत जाओ। "मैं आँसू भरे आँखों से बिना किसी को देखे टूटे हृदय के साथ चल पड़ा। पूरी रात जंगल में बिताया। अब भी गोली चलने कि आवाज़ है। धीरे-धीरे सड़क को पार किया। आखिरी बार चक्ककोंबन मुझे देखने के लिये आया। हम दोनों बहुत देर तक गले लगाकर रोये, चक्ककोंबन वापस जाने के लिए तैयार नहीं था। उसे वापस भेजने के लिए मुझे जोर लगाना पड़ा। उसने एक खुशी की खबर सुनाई। मैं एक और कोंबन का भी बाप बन गया हूँ। चक्काकोंबन के जाने के पाँच मिनट बाद मेरे कमर में कुछ दबा। धीरे-धीरे मैं कमज़ोर होने लगा। कुछ समय तक पेड़ का सहारा लिया। धीरे-धीरे आँखे धीमी होने लगी। धीमी आँखों से मैंने देखा कि अंजान लोग और बंदी हुई हाथियाँ मेरे पास आ रहे थे। तब तक मैं पूरी तरह कमज़ोर हो गया था। हाथियों ने मुझे गाड़ी पर चढ़ाने के पहले, काले रूमाल से आँख बंद करने के पहले, धीमी रोशनी मैं उस पार खड़े मेरा परिवार, मेरा सब कुछ..... सब... सब मेरे आँखों से दूर होते महसूस होने लगा। ये गाँव, गाँववाले, ये जंगल, परिवार को इस ज़िंदगी में दुबारा नहीं देख पाऊंगा।

मैं सिर्फ एक जानवर हूँ ना! जानवर.....

अश्विन विजित
हष्मा पी एम का सुपुत्र

लेख

एक अच्छा लड़का

एक बूढ़ी औरत सड़क पार करना चाहती थी। वह कमजोर थी। इसलिए वह मदद चाहती थी। उसने लंबा इंतजार किया। वह अकेली प्रतीक्षा करती रही। उसने बड़ी संख्या में स्कूली लड़कों को देखा । वे हस रहे थे। वे घर जा रहे थे। तो वे खुश थे उनकी नज़र बुढिया पर पड़ी। उन्होंने उसकी मदद नहीं की ! वे चलते रहे। लेकिन एक लड़का बुढिया के पास गया। उसने उनसे कहा, "माँ! क्या आप सड़क पार करना चाहते हो? मैं आपकी मदद करूँगा"। "मैं तुम्हें दूसरी तरफ ले जाऊँगा"। लड़के ने बुढिया की मदद की। वह उसे सड़क पार ले गया। उसने अच्छा काम किया। वह खुश था। उसने कहा, "मैंने किसी की माँ की मदद की; तो कोई मेरी माँ के बुढ़ापे में उसकी मदद करेगा"।

"प्रिय भगवान! इस अच्छे लड़के पर दया करो" बुढिया ने अपनी प्रार्थना में कहा।

विजित के के
एसएफटीई

लेख

जीवन अनिश्चित था

जीवन अनिश्चित था...
थोड़ी उम्मीदों के साथ, असुरक्षा के ज्वार,
और जुदाई का डर। लड़ना चाहता था,
मेरी पूरी ताकत के साथ अपनी पूरी शक्ति से विरोध करूँ और दिल को दहाड़ने पर मजबूर करूँ।

लेकिन..
अराजकता ने मुझे विचलित कर दिया,
कुछ शब्दों ने मुझे तोड़ दिया,
कुछ असावधानी ने मुझे चोट पहुँचाई है।

जीवन अनिश्चित था...
मैं बेबस था, कल्पना करने से डरता था
आगे की अनिश्चितता और नई वास्तविकताओं का सामना करने में डर लगता है।

तो...
मैंने अपनी आँखे बंद कर ली
पूरी बेबसी और डर से।

लेकिन...
जब मैंने खोली आँखें, जीवन फिर से गति में था
हमेशा की तरह सहज, कल की तरह खूबसूरत।
क्या वो सपना था, या सिर्फ एक कल्पना
मुझे नहीं है पता।

लेकिन...
मुझे यह वास्तविकता पसंद है
मैं अपनी जिन्दगी से प्यार करता हूँ
मेरा शरीर, मेरी आत्मा, मेरी भेद्यया और निशान
मुझे अपने अस्तित्व से प्यार है

हष्ना पी एम
एफईटीओ -4

लेख

संभालो.....माँ को

संभालो माँ को.. न बच्चे को...

क्यों की..

बच्चे का ध्यान रखा जा रहा है- खिलाया, दुलारा और दुनिया भर का प्यार दिया- केवल माँ द्वारा नहीं, उसके साथी, दादा-दादी, नाना-नानी, भाई-बहन, दोस्त सभी।

लेकिन माँ...

नींद की कमी से उसका दिमाग सुन हो सकता है जैसे-तैसे ठीक हो, उसकी गति यांत्रिक हो सकती है। दूसरों को एक माँ से ज्यादा एक झंझट की तरह महसूस हो। हो सकता है बिस्तर पर बैठी हो रो रही हो, अपने शरीर और जीवन में अभिभूत महसूस कर रही हो।...

शायद माँ अपराधबोध से भरी हो सकती है, क्योंकि उसके दिमाग में

"वो काफी अच्छी नहीं है। उसका लहु बह रहा है, दर्द से कराह रही है, सूजी हुई और भावुक भी है।

और...

माँ उस बच्चे की पूरी दुनिया है और उसकी सहायता करना आवश्यक है। ताकि वह उस प्रसवोत्तर कोहरे में गायब न हो जाए ।

इसलिए ...

माँ को संभालो, न ही बच्चे को।

एक माँ इस बात से सहमत होती है की उसका बच्चा अधिक मायने रखता है। लेकिन उसे दर्द हो रही है। जबकी बच्चे के पीछे वही है।

पृष्ठभूमि में,

यह सब होने दें, अपने बच्चे को हर समय खिलाना, उसे आराम से गले लगाना, नवजात शिशु के रोने में मुस्कुराना और रो देना, और उस बच्चे का सब कुछ हो जाना ।

तो....

वो माँ है जिसे आपके प्यार की जरूरत है। और एक माँ को हमेशा याद रहेगा जिसने उसे थामा था।

तो..

बजाय "मैं बच्चे को देखने आ रहा हूँ," कहने की कोशिश करो, "मैं तुम से मिलने आ रहा हूँ और बच्चे से भी मिलूंगा।

क्योंकि माँ को और अधिक संभालने की आवश्यकता है। बच्चे को माँ हर हाल में संभाल लेगी, लेकिन माँ को हमें है संभालना।

माँ को संभालो, न ही बच्चे को ।

बबिता भास्कर
अनीष वी आर की सुपत्नी

लेख

क्रोशिए का कला

क्रोशिए एक पारंपरिक हस्तकला है जो सदियों से चली आ रही है, इसकी उत्पत्ति 19 वीं शताब्दी में हुई थी। इसमें एक हुक का उपयोग करके यार्न से कपड़े का एक टुकड़ा बनाना शामिल है, जो एक घुमावदार छोर वाला एक छोटा उपकरण है जिसका पैटर्न बनाने के लिए लूप के माध्यम से यार्न को खींचने के लिए किया जाता है। नाजुक फीता डोरी से मोटे और गर्म कंबल तक, वस्तुओं की एक विस्तृत श्रृंखला बनाने के लिए क्रोशिए का उपयोग किया जा सकता है। क्रोकेटेड कुछ सामान्य वस्तुओं में टोपी, स्कार्फ, मिट्टन्स और शॉल शामिल हैं। क्रोशिए का उपयोग होम लिनन बनाने के लिए भी किया जाता है - जैसे मेज़पोश, कुशन कवर और पर्दे। क्रोशिए का इतना लोकप्रिय शगल क्यों है, इसका एक और कारण यह है कि इसे सीखना आसान है। सुई के अन्य रूपों के विपरीत, जैसे बुनाई या कढ़ाई, क्रोशिए को केवल एक उपकरण की आवश्यकता होती है, जिससे आरंभ करना आसाना हो जाता है। क्रोशिए भी एक क्षमाशील शिल्प है, क्योंकि सिलाई को पूर्ववत करके और फिर से शुरू करके गलतियों को आसानी से ठीक किया जा सकता है।

क्रोशिए की बहुमुखी प्रतिभा को जोड़ना यह तथ्य है कि इसे कहीं भी किया जा सकता है, जिससे यह सभी उम्र के लोगों के लिए एक अच्छा शगल बन जाता है। क्रोशिए एक पोर्टेबल शिल्प है, क्योंकि इसमें केवल एक हुक और सूत की एक गेंद की आवश्यकता होती है। इसका मतलब यह है कि इसे चलते-फिरते किया जा सकता है, चाहे वह लंबी कार यात्रा पर हो या किसी अपॉइंटमेंट की प्रतीक्षा करते समय। क्रोशिए समूहों में भी किया जा सकता है, जिससे यह दोस्तों और परिवार के साथ आनंद लेने के लिए एक महान सामाजिक गतिविधि बन जाती है। सीखना, आराम करना और रचनात्मक व्यक्त करने का एक शानदार तरीका सीखना आसान है। चाहे अकेले या एक समूह में किया जाता है, क्रोशिया आराम करने और अद्वितीय, सुंदर, उपयोगी कुछ बनाने का एक शानदार तरीका है और एक शौक है जिसमें एक पूरक आय अर्जित करने की क्षमता है।

मेरी मां ने अपनी भाभी के मागदर्शन में 2020 के लॉकडाउन के दौरान क्रोशिए की दुनिया में कदम रखा, जो इस में विशेषज्ञ हैं। उसने यूट्यूब से भी मदद ली। उसके सामने एकमात्र समस्या यह थी कि अधिकांश वीडियो स्पेनिश में थे। धीरे-धीरे उसने बुनियादी डिजाइनों के माध्यम से अपना रास्ता बनाया और रास्ते में छोटी-छोटी सफलताएँ पाईं। टांके बनाने की दोहराव गति मन को शांत करने और तनाव को कम करने में मदद कर सकती है। दिन में दो घंटे जो वह क्रोशिया काटने में बिताती है, उसके जैसे किसा व्यक्ति के लिए आराम करने का एक शानदार तरीका है, जो घर की शांति पसंद करता है। कभी-कभी छोटी चीजें सबसे बड़ी खुशी लाता हैं - मेरी मां के लिए, क्रोशिया बस यही करता है।

शंकरी सी के
जिनु सागर की माँ

लाजवाब ज़ायका

चिक्कन नूडेल्स

मेरिनेट करने के लिए

बोनलेस चिक्कन - 250 ग्राम (छोटे टुकड़ो में काट ले)
डार्क सोया सॉस - 1 चम्मच
काली मिर्च पाउडर - 1/4 चम्मच
वाइट विनेगर - 1 चम्मच
बेकिंग सोडा - 1/4 चम्मच
नमक - 1/4 चम्मच

चाऊमीन बनाने के लिए

1. नूडेल्स - 150 ग्राम
2. पत्ता गोभी - 1 कप बारीक कटा हुई
3. गाजर - 1 कप बारीक स्लाइस में कटी हुई
4. शमिला मिर्च - 1 कप बारीक स्लाइस में कटी हुई
5. स्प्रिंग सफ़ेद प्याज़ - 2 चम्मच बारीक कटा हुआ
6. काली मिर्च पाउडर - एक चुटकी भर
7. वाइट विनेगर - 1 चम्मच
8. ग्रीन चिल्ली सॉस - 2 चम्मच
9. रेड चिल्ली सॉस - 1 चम्मच
10. तेल - 2 बड़ा चम्मच

बनाने की विधि

नूडेल्स बनाने के लिए सबसे पहले एक बाउल में बोनलेस चिक्कन, डार्क सोया सॉस, काली मिर्च पाउडर, नमक, वाइट विनेगर और बेंकिंग सोडा डालकर हाथ से मिला ले और चिक्कन को 20 मिनट मेरिनेट होने रख दे।

फिर एक भगोने में पानी, 1/4 चम्मच नमक और एक चम्मच तेल डालकर पानी को उबालने के लिए रख दे। पानी में उबाल आने के बाद इसमें नूडेल्स डालकर नूडेल्स को 80% सॉफ्ट होने तक पका ले। जब चिक्कन सॉफ्ट हो जाएं फिर चिक्कन में सफ़ेद प्याज और गाजर डालकर 30 सेंकड फ्राई कर ले। फिर पत्तागोभी शिमला मिर्च डालकर मिला ले।

अब इसमें काली मिर्च पाउडर और नमक डालकर एक मिनट फ्राई कर ले। एक मिनट बाद इन सब्जियों में उबले हुए नूडेल्स डाल ले । फिर डार्क सोया सॉस, वाइट विनेगर, रेड चिल्ली सॉस, ग्रीन चिल्ली सॉस डालकर दो फोर्क की मदद से नूडेल्स और सभी चीजों को अच्छी तरीके से आपस में मिला ले।

ध्यान रहे नूडेल्स को हल्के हाथ से मिक्स करे नूडेल्स टूटना नहीं चाहिए। जब नूडेल्स अच्छे से मिक्स हो जाएं गैस को बंद कर दे और नूडेल्स को प्लेट में निकालकर ऊपर से हरे प्याज से गार्निश कर लें।

देवना के चलना
किरण टी राज की सुपुत्री

लेख

एक थाई यात्रा

7 दिसंबर को, हमने कोच्चि अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से शाम 7:30 बजे थाईलैंड के लिए अपनी यात्रा शुरू की। हम अगले दिन सुबह 5 बजे थाईलैंड के डीएमके एयरपोर्ट पहुंचे। पूरी यात्रा के दौरान हमने जो दो ची जें देखीं, वह थी प्रदूषण रहित पर्यावरण और स्वच्छता।

हम एयरपोर्ट से सीधे पटाया गए। अपना नाश्ता करने के बाद हम नोंग नूग गाँव गए जो एक संग्रहालय की तरह था। वहां हमने कैक्टस म्यूजियम देखा, तरह-तरह की कारें थीं और डायनासोर का म्यूजियम था। हमने नूग नूच गांर में ही दोपहर का खाना खाया । फिर हमने नूग नूच गाँव में हाथी शो और थाई सांस्क-तिक शो देखा। थाई सांस्कृतिक शो बहुत ही सुंदर था। रंग-बिरंगी रोशनी और रंग-बिरंगे परिधानों के शानदार संयोजन से शो बेहद रंगारंग रहा। हाथी शो भी देखने में बहुत शानदार था। हाथी ने नृत्य किया, बास्केटबॉल और फुटबॉल खेला, उन्होंने तीर चलाया, पेंट किया और मनुष्यों की मालिश की! यह सब एन्जॉय करने के बाद हम अपने रिजॉर्ट सीट्रस ग्रांडे गए। लगभग 8:00 बजे, हम अल्कज़ार कैबरे देखने गए। अल्कज़ार कैबरे बहुत रंगीन था। शो के बाद हमने खाया और फिर अपने रिजॉर्ट चले गए।

दूसरे दिन, हम कोरल द्वीप गए। पटाया समुद्र तट से, हम एक स्पीड बोट में कोरल द्वीप गए। रास्ते में हम एक छोटे से द्वीप पर रुके, जहाँ हमने पैरासेलिंग की। यह एक अद्भुत अनुभव था। फिर हम स्पीड बोट में सवार हुए और अंडरवाटर सी वॉक के लिए अपने अगले गंतव्य के लिए रवाना हुए। फिर वे हमें पानी के नीचे जाने में मदद करते और मछलियों को खिलाने के लिए हमें रोटी के कुछ टुकड़े देते। मुझे बहुत मज़ा आया। इस अद्भुत अनुभव के बाद हम कोरल द्वीप गए। वहां हमने जेट स्कीइंग और बनाना बोट राइड की। जेट

स्कीइंग समुद्र में स्कूटर चलाने जैसा है। "बनाना बोट" एक उबड़-खाबड़ नाव है जो बार-बार पानी में कूदेगी। शाम को हम बुद्ध मंदिर गए। वहां से हम पूरा पटाया शहर देख सकते हैं। बुद्ध के विभिन्न चरणों की मूर्तियां थी। इसके बाद हमने डिनर खाया और अपने रिजॉर्ट में वापस चले गए। रात में, हम पटाया वॉकिंग स्ट्रीट गए।

तीसरे दिन, हम बैंकॉक गए। सबसे पहले हम जेम्स गैलरी गए । यह दुनिया की सबसे बड़ी रत्न गैलरी थी। रत्न गेलरी में, रत्न बनाने के लिए उनके द्वारा अपनाए जाने वाले विभिन्न उपायों के माध्यम से हमने एक छोटी ट्राम यात्रा की। फिर हम फ्लोटिंग मार्केट गए। एक छोटी सी नाव से हम बाजार के छोर तक गए। फिर हम अपना खाना खाने चले गए। लंच के बाद हम शॉपिंग के लिए इंदिरा मार्केट गए। वहां से हमने यादगार खरीदे। रात हो गई जब हमने अपनी खरीदारी बंद कर दी। इसलिए, हमने अपना रात का खाना खाया और विट्ज नामक रिसॉर्ट में चले गए।

चौथे दिन, हम सफारी वर्ल्ड गए। वहां हमने छह कार्यक्रम देखे, ओरंगूटन शो, एलिफेंट शो, स्पाई वॉर शो, डॉल्फिन शो, काउबॉय शो और सीलायन शो। ओरंगूटन शो एक मजेदार बॉक्सिंग शो कि तरह था। हाथी शो वैसा ही था जैसा हमने नूग नूच गाँव में देखा था। फिर हम स्पाई वॉर शो में गए। यह एक असली लड़ाई देखने जैसा था। शो कमाल का था।

फिर हमने सफारी वर्ल्ड से लंच खाया। लंच के बाद हम डॉल्फिन शो देखने गए। हमने डॉल्फिन्स का शानदार प्रदर्शन देखा। आगे हम काउबॉय शो में गए। यह स्पाई वॉर शो जैसा था। इसके बाद हम सी लायन शो में गए। यह भी बहुत अच्छा था। सारे शो देखने के बाद हम सफारी गए। हमने शेर, बाघ, विभिन्न प्रकार के हिरण आदि देखे। जब हमने सफर पूरा कीया तो शाम हो गई। हम अपने रिसॉर्ट में वापस चले गए। रात को हम खाना खाने गए।

पांचवां दिन थाईलैंड में हमारा आखिरी दिन था। नाश्ते के बाद, हम दो बुद्ध मंदिरों में गए। सबसे पहले स्वर्ण बुद्ध मंदिर था। यह दुनिया का सबसे बड़ा बुद्ध है जो केवल सोने से बना है। मंदिर देखने में बहुत सुंदर था। दूसरा ता मार्बल बुधा। बुद्ध सोने की परत चढ़े हुए हैं। संगमरमर की नक्काशी और मंदिर इटालियंस द्वारा बनाया गया है। यह देखने में बहुत सुंदर है। उनके पास बुद्ध के विभिन्न चरणों की मूर्तियां थीं। यह मंदिर पिछले वाले से बहुत बड़ा था। इसके बाद हम कोच्चि जाने के लिए डीएमके इंटरनेशनल एयरपोर्ट गए। शाम 6:00 बजे ढेर सारी सदाबहार यादों के साथ हमने थाईलैंड को अलविदा किया... .

शालिनी के वी
आदर्श के की माँ

लाजवाब ज़ायका

चॉकलेट केक

सामग्री

1. मैदा - 1 कप
2. कोको पाउडर - 3 बड़ी चम्मच
3. बेकिंग सोडा - $^1/_2$ चम्मच
4. नमक - एक चुटकी
5. दूध - $^1/_2$ कप
6. इनस्टन्ट कॉफी पाउडर - $^1/_2$ चम्मच
7. अंडा - 2 संख्या
8. वनिला एस्सन्स - 1 चम्मच
9. तेल - $^1/_3$ कप
10. शक्कर पाउडर - 1 कप

बनाने की विधि

180^{0}C में ओवन दस मिनट केलिए प्रीहीट कर ले। एक बॉल के अंदर तेल लगाकर तैयार करें। एक बॉल में मैदा, बेकिंग सोडा, कोको पाउडर और नमक लेकर एक विस्क के साथ मिलाए दूसरे बॉल में कॉफी पाउडर और दूध मिलाए तीसरे बॉल में अंडे और वेनीला एसेंस को फेंट ले एकसाथ लगभग 3 मिनट केलिए इल्क्ट्रिक बीटर का उपयोग करें शक्कर पाउडर डालें और एक और मिनट मिलाए। मिश्रण में तेल डाले और एक और मिनट के लिए फेंटे अब दूध और कॉफी का मिश्रण डालें और धीमी गति से 30 सेकेंड तक लगातार चलाते रहें। इस मिक्स में स्टेप - 3 के सामग्रियों को मिलाए मिक्स को केक बैटर में डाल के 180 डिग्री सेल्सियस पर लगभग 30 से 35 मिनट के लिए बेक करें। ओवन से निकाले और केक को पैन में 10 मिनट के लिए रखें। बैकिंग पैन के किनारे के चारों और एक लंबा चाकू चलाएं। फिर केक को रैक पर घुमाएं ताकि वह पूरी तरह से ठंडा हो जाए।

कहानी

इवान टॉम टिलसन
टिलसन थॉमस का सुपुत्र

सुअर और भेड़िया

एक जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। सब मौज मस्ती से वहां जीते थे । उन में से एक सुअर और भेड़िए के बीच बहुत गहरी दोस्ती थी। वे हमेशा एक साथ समय बिताते थे। भेड़िया भी बहुत खूबी से अपना काम निपटा लेता था। वह इतना माहिर था कि वह बहुत चालाकी से अपनी दोस्ती सुअर पर जमाता था लेकिन वाकई में वह उसे मारकर खाना चाहता था। लेकिन इसका पता बेचारे सुअर को नहीं था। वह हमेशा कि तरह शाम को तालाब में पानी पीने जाता था। लेकिन एक दिन जब सुअर तालाब से पानी पी रहा था, तो भेड़िए ने उसे पानी पीते देख लिया और उसने सोचा कितने दिनों तक इसे ऐसे ही छोड दूँ। चलो आज अच्छा मौका है सुअर को मारने का, यह सोचकर वह झाड़ी के पीछे छिप गया। जैसे ही सुअर पानी पी रहा था भेड़िए ने सुअर को खाने के लिए उस पर छलांग मारी। अचानक सुअर वहां से हट गया और भेड़िया तालाब में गिरकर डूब गया।

सीख : सभी दोस्त सच्चे दोस्त नहीं होते ।

लेख

प्रिया ए.बी.
इंस्ट्रुमेंट मेकानिक

पानी ही पानी

यह कहानी उस समय कि है जब केरल में बाढ़ आई थी। एक आदमी के हाथ में शराब की बोतल है। वह एक पुरानी झोपड़ी में प्रवेश करता है। अचानक उसमें से एक महिला के चिल्लाने की आवाज़ आई, मैं यहाँ फिर कभी वापस नहीं आऊँगी। भले ही आप ऐसा करने की कोशिश करें। मैं फिर कभी वापस नहीं आऊँगी। जाओ शराब में डूब मरो;

कल्लू कि बीवी गुस्से से चिल्लाई। जहाँ चाहो जाओ!! मुझे यहाँ कोई नही चाहिए...!! जाओ..! शराब की बोतल हाथ में कस कर पकड़ते हुए कल्लू ने पूरे विश्वास के साथ कहा।

(आधी रात में)

बहुत तेज़ बरसात हो रही है। गाँव में पानी भरने लगता है। कल्लू बेफिक्र सो रहा है और अपने बांस के बिस्तर पर खर्राटे ले रहा है। पानी का स्तर तेजी से बढ़ने से हर तरफ लोग चीख-पुकार मचा रहे हैं। कल्लू अभी भी अपने बिस्तर पर सो रहा है और पानी उसके बिस्तर तक पहुँचने वाला है। कल्लू के घर के बाहर कोई चिल्ला रहा है। ओह! कल्लू!...कल्लू! जागो! अरे कमीने! तुम मरने वाले हो। हर तरफ बाढ़ है, कमीने...जागो! जल स्तर को देखते हुए उस व्यक्ति ने बस कुछ अपशब्द कहे और पागलों की तरह भाग खड़ा हुआ। कुछ सेकंड के बाद जल स्तर बिस्तर के शीर्ष तक पहुंच गया। कल्लू का शरीर पानी में डूबने लगता है। वह अचानक जाग जाता है और पानी में गिर जाता है। वह अभी-अभी पानी से बाहर आया और जोर-जोर से सांस ले रहा था। वह चिल्लाने लगता है, शीला! शीला! वह पानी में चलने की कोशिश कर रहा है लेकिन फिर से नीचे गिर जाता है क्योंकि वह बहुत अधिक नशे में है। फिर उसने अपने आप को फिर से पानी से बाहर निकाला और जोर से कोशिश की और अब वह अपनी झोंपड़ी से बाहर है और वह अजीब तरह से हर जगह देख रहा है।

(हर जगह अंधेरा है और पानी चारों तरफ है)

वह बस दंग रह गया और पता नहीं चला क्या यह चारों तरफ आपदा हो रही है? क्या दुनिया अब खत्म हो रही है? उसकी बातें घबराहट और डर से भर जाती हैं.....लेकिन अपनी जान की खातिर उसने बस एक गहरी सांस ली और अपने पडोसियों को पुकारने लगा, अरे! चीन्दू....औह! सत्या... कहाँ हो तुम? सब कुछ खोजने लगता है। इतना अंधेरा है और पानी तेजी से भर रहा है और वह कुछ नहीं कर पा रहा है, फिर वह उस पेड़ तक पहुंचने की कोशिश करता है। उसने कई बार कोशिश की अब वह इतना थक गया है कि उसकी सांसों समय के खिलाफ दौड़ रही है। यह बहुत ही निराशाजनक और थका देने वाली स्थिति है उसने बस कुछ देर के लिए अपनी आँखें बंद कीं और एक गहरी साँस ली। अब उसने अपनी पूरी ताकत से इतनी कोशिश की कि वह किसी तरह इस बार चढ़ पाया। उसने अभी अभी पेड़ के तने वाले हिस्से को पार किया है।

अब उसे बस एक शाखा मिली जहाँ वह सिर्फ बैठ सकता है और तेज़ सांस लेने और आराम करने लगता है। कुछ मिनटों के बाद उसे एक आवाज सुनाई दी, एक फुफकारने की आवाज़। वह दाएं-बाएं ऊपर की ओर देखने लगता है, लेकिन जब वह ऊपर देखता है, तो वह स्पष्ट रुप से देखने के

लिए अपनी आँखों पर दबाव डालता हैं। वह हक्का-बक्का रह गया क्योंकि वह अजगर था जो उससे करीब 6 फीट की दूरी पर है। वह अपने होश खोने लगता है लेकिन किसी तरह खुद को नियंत्रित करने की कोशिश करता है। वह बड़बड़ाने लगता है,

है भगवान....यह सांप है....है भगवान मैं खुद को कैसे बचाऊंगा? कृपया मेरी मदद करें, कृपया मेरी मदद करें, मैं फिर से कोई गलती नहीं करूंगा। मैं शीला को सम्मान दूंगा और मैं हमेशा सभी का सम्मान करूंगा। कृपया मत लो, मेरी जान मत लो....मुझे बचाओ....बस आखिरी बार; वह सिसक रहा है कुछ देर बाद ही सांप पेड़ पर से कही चला गया। कुछ और मिनटों के बाद कल्लू डर के मारे ऊपर की और देखने लगता है और अब उसे कुछ नहीं दिखा। कोई सांप नही था।....अब कल्लू एक गहरी सांस लेता है और भगवान की स्तुति करने लगता है, भगवान का शुक्रिया अदा करता है और फिर वह बस तने पर अपना सिर रखता है और कुछ झपकी लेने की कोशिश करता है। लेकिन इस दौरान वह बाढ़ के पानी पर कुछ लाशों को तैरते हुए इधर-उधर जाते हुए देख रहा है। वह फिर से डर गया। उसने अपनी पूरी रात ऐसे ही बिताया।

(बहुत सवेरे)

उसे कुछ कर्कश आवाज सुनाई देती है जो दूर से आती हुई प्रतीत होती है और वह बस अपनी आँखे खोलने की कोशिश कर रहा है। उसे एक नाव की कुछ धुंधली सी तस्वीर दिख रही है ऐसा लग रहा है जैसे कई मोटर बोट दूर जा रही हो....वह एक लंबी गहरी सांस लेता है और केवट को बुलाने की कोशिश करता है लेकिन उसकी आवाज़ बीच में ही अटक जाती है और वह बार-बार कोशिश करता है, इस बार वह जोर से चिल्लाता है और थोड़ी देर चिल्लाता है, फिर केवट पेड़ों की तरफ देखने लगता है और वह कोशिश कर रहा है संकेत है कि वह उस पेड़ पर है। कल्लू की आवाज़ सुनकर केवट पेड़ के पास पहुँच जाता है और कल्लू बोला, मैं यहाँ उपर की ओर हूँ। नाव में तीन अन्य सदस्य हैं और यह सरकार की एक बचाव नाव की तरह दिखती हैं। वे दंग रह जाते हैं और उससे पूछने लगते हैं, तुम यहाँ कब तक हो? उसकी आंखों में आंसू हैं, सर, पूरी रात अब तुम्हारे साथ और कोन है? कल्लू ने साँप की तरफ देखते हुए कहा, और कोई नही, मैं यहाँ अकेला शख्स हूँ और फिर वे उसे नीचे ले जाने की कोशिश कर रहे थे.... और वह बस नाव चलने लगी। एक केवट ने कल्लू से पूछा, तुम्हारा पूरा परिवार कहाँ है? आपकी पत्नी कहाँ है? उसने इतना ही कहा सर मेरी पत्नी अभी मायके गई थी और पूरा गाँव डूब गया। मैं किसी तरह पेड़ पर चढ़कर भागने में सफल रहा।

"ओह! सभी महिलाएं हर जगह एक जैसी होती हैं। वे हमेशा अपने माता-पिता के घर जाने का मौका तलाशते है। वे हमेशा बचने का कोई न कोई बहाना ढूँढ ही लेते हैं"।

लेकिन कल्लू उसे बीच में ही टोक देता है। "नहीं सर, यह मेरी गलती थी। मैं रोज़ शराब पीता था और उसकी पिटाई करता था। इसलिए उसने मुझे अकेला छोड दिया"। तो तुम्हारी पत्नी का घर कहाँ है? उस केवट ने पूछा.. फौरन जवाब देता है कल्लू, "आलपुषा " और केवट अचानक उत्तर देता है, "वहाँ भी बाढ़ है"।

कल्लू के माथे पर तनाव की लकीरें बनने लगती है।

लेख

एक पापड़ की कहानी

इष्या विनोद
कीर्ति आर की सुपुत्री

एक दिन जब मैं नींद से उठा मैंने अपने आप को पापड़ के एक पैकेट में फँसा हुआ देखा । मैं बहुत डर गया । मुझे अचानक क्या हो गया!!! मैंने सोचा।

मैंने बचने की कोशिश की लेकिन नहीं बच सका। मेरे साथ और भी पापड़ थे। मैंने सभी पापड़ों को देखा और वे भी मेरे जैसे बहुत पतले थे। हम सब एक मेज़ पर बैठे थे।

तभी एक महिला आई और पैकेट खोला। कुछ पापड़ के साथ वह मुझे भी उसके साथ ले गई।

अब स्नान का समय था। उसने मुझे तेल से भरे रसोई के बर्तन में डाल दिया। अचानक मेरा शरीर मोटा होने लगा और उसमें बुलबुले आ गए। मुझे बर्तन से निकाल लिया गया और एक थाली में रखा गया।

कुछ मिनट बाद किसी ने मुझे टुकड़े-टुकड़े कर दिया। वह बहुत दर्दनाक था। फिर उसने मुझे खा लिया।

अगले जन्म में मैं पापड़ बनना नहीं चाहता हूँ।

लेख

दर्द

नीतु.के
आउटफिट सहायक

दर्द जो है सीने में,
नयनों से अश्रु बन कर बहे।
सखा बने चाँदनी और छाया
आज केवल सन्नाटा है छाया।
इन अंतर्हीन बवंडर में
अविरत आँसू छलक पड़े।।

तडप उठते है ये दिल,
अंतहीन व्यथा के साक्षी बन कर।
किसी की बनाई शिल्पकला जैसे,
ये जिन्दगी है, इक विदूषक की तरह।
तपती आग में जलने के लिए
कर रही है इंतजार मेरी ये जिन्दगी।।

पिन्टु कुमार राम
वेल्डर सह फिट्टर

लेख

"पोत निर्माण"

प्रस्तावना : 40000 वर्ष पुराना ऋग्वेद मे उल्लिखित "पोत निर्माण" की तकनीक विकसित थी, जिसके द्वारा समुद्री मार्ग से व्यापार करने की व्यवस्था, बंदरगाहों की यात्रा का उल्लेख मिलता है।

दुनिया का सबसे पुराना डॉकलोयल 2300बीसी ईसा पूर्व भारतीय घाटी सभ्यता जो आज गुजरात के नाम से जाना जाता है। मतलब की पोत निर्माण तकनीक तथा उपयोग भारतीय सभ्यता के इतिहास मे शामिल है जिससे राष्ट्र के निर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं।

महत्व: देश की कुल 7516 कि.मी. लम्बी तट रेखा भारत के 13 राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों मे फैली हुई है। जिसके चलते पोत निर्माण तकनीक की भूमिका और बढ़ जाती हैं। जैसे 4 दिसंबर 1971 का दिन और ऑपरेशन ट्राइडेंट के तहत भारतीय नौसेना ने करॉची नौसेना पर हमला बोलदिया जिसमे करॉची बंदरगाह तबाह कर दिया गया जिसमे आई.एन.एस. विक्रांत ने लीड किया था, करॉची के तेल डीपों 7 दिनों तक आग मे घलती रही और इसी दौरान पी. एन.एस. गाजी को जल मे ही दफन कर दिया गया।

1961 मे गोवा को पूर्तगलियों से मुक्त कराने में जल सेना की काफी मदद की जिसके द्वारा गोवा को मुक्त कराया गया। कहने का मतलब यह है कि राष्ट्र की तटीय सुरक्षा हो या समुद्री मार्ग से व्यापार, बंदरगाहों की यात्रा, संयुक्त अभ्यास, मानवीय मिशन, आपदा राहत कई क्षेत्रों में युद्धपोत, पेट्रोलिंग वेसल, ऑयल टैंकर, क्रेनवार्ज कोस्टलवार्ज, कंटेनर वैसल, चौक वाहक जहाज इत्यादि की तकनीक मुख्य भूमिका निभाती आ रही है। कारण: 2020 के ग्लोबल आर्डर बुक के तहत 30 प्रतिशत पोतनिर्माण आज भारत मे दोर है। इस वर्ग के 22 उद्योग गति पूर्वक कार्यशील है। लेकिन आज जरूरत है, "विश्व को बनाने के लिए भारत मे बनाओं" भारत के प्रति दुनिया में काफी उम्मीद इसके प्रति बढ़ी है चाहें जल मेट्रो हो, कंटेनर पोत, गश्तीनौक या युद्धपोत इत्यादि।

(क) तकनीक का उपयोग: हल असेंबली मे फिटिंग या वेल्डिंग, मशीनरी कार्य को तेजी से करने के लिए रोबोटीक माध्यम का अधिक प्रयोग मे लाना जिसके उपयोग कर ब्लॉक तथा पोत कम समय मे तैयार किया जा सकें।

(ख) कन्वेयर सिस्टम: को अपनाने की काफी जरूरत है जिससे सेलप्लेट की एसेम्बलिंग, डेकप्लेट की एसेम्बलिंग, वहम प्लेट की एसेम्बलिंग मे क्रमवद्य तरीके से होकर ब्लॉकों तथा पोत के एक एक इकाई लगने वाले हिस्सों को तेजी से तैयार कर खड़ा कर सके और ब्लॉकों के तेजी से जोड़ पाए क्योंकि पोत का ढ़ाचा तैयार करने मे ही ज़्यादा समय लगता हैं।

(ग) योजना: बड़े कार्य को अंजाम देने के लिए योजनाबद्ध तरीकों से कार्य करें। जिसमें कार्य के प्रकार को अलग-अलग खाका तैयार कर उसे बांट दें जैसे की फिटींग कार्य, आउट फिटिंग कार्य, पोत मे लगने वाले मशीनों का सीटिंग, पाइपिंग, इत्यादि जसमे योजना हुए समय से पहले तैयार कर पाए।

(घ) कार्य कुशलता : के माध्यम से ही सम्भव हैं, कारीगर अत्याधिक कुशल बनाना चाहिए, जिससे कार्य की अच्छी समझ होना आवश्यक है। सुपरवाइजरों, इंजीनियरों के द्वारा अत्याधुनिक औजार का प्रयोग तथा प्रशिक्षित करके कुशलता प्राप्त कर कुशल बन सकते है।

(ड) सुरक्षा : सुरक्षा हमारे कार्य का अहमहिस्सा है, जिसका महत्व देते हुए निर्माण कार्य होना चाहिए, चाहे वह स्वसुरक्षा हो यो कार्य सुरक्षा, मशीनरी या औजारों की सुरक्षा या स्वास्थ्य हो।

(च) राष्ट्र प्रेम: कठीन से कठीन कार्य को कम समय में करने की उर्जा हमें राष्ट्र प्रेम से ही मिलती है, तो ऐसे कार्यक्रम का आयोजन करे ताकि राष्ट्र प्रेम तथा राष्ट्र को समर्पित हर कार्य हो सकें।

निष्कर्ष: सच्चाई यह है कि पोत निर्माण में सापेक्ष श्रम लागत 52% सामग्री लागत 13% मालिकाने की लागत 26% लगता है, मगर टेक्नोलाजी का प्रयोग, योजनाबद्ध तरीका, डिजिटल का प्रयोग, कन्वेयर प्रणाली, रोबोट प्रयोग कार्यकुशलता, सुरक्षा के इन सभी प्रयोगो से देश तथा विदेश के मांग को पूरा कर सकते है, साथ ही बड़े हद तक लागत को भी कम कर सकते है।

विष्णु एस
प्रबंधक (कानूनी)

लेख

आधुनिक भारतीय शिक्षा में प्राचीन जड़ों की प्रासंगिकता

भारतीय शिक्षा प्रणाली की एक समृद्ध और प्राचीन विरासत है जो हजारों साल पहले की है। यह एक अनूठी शिक्षा प्रणाली है जो छात्रों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण सहित उनके समग्र विकास पर ज़ोर देती है। समय के साथ कई तरह के प्रभावों से प्रणाली को आकार दिया गया है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली की सबसे विशिष्ट विशेषताओं में से एक गुरुकुल प्रणाली है, जो प्राचीन भारत में शिक्षा का पारंपरिक रूप था। इसमें एक गुरु (शिक्षक) के साथ रहना और प्रत्यक्ष निर्देश, अवलोकन और अभ्यास के माध्यम से सीखना शामिल था। इस प्रणाली ने अकादमिक ज्ञान के अलावा चरित्र, अनुशासन और नैतिक मूल्यों के विकास पर ज़ोर दिया।

भारतीय शिक्षा प्रणाली का एक अन्य प्रमुख पहलू वैदिक शिक्षा है, जो हिंदू धर्म के प्राचीन पवित्र ग्रंथों वेदों से निकटता से जुड़ा हुआ है। वैदिक शिक्षा में भाषा, गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन और धर्म का अध्ययन शामिल था।

भारतीय शिक्षा प्रणाली का अध्ययन और अन्वेषण कई कारणों से महत्वपूर्ण है। सबसे पहले, यह प्रणाली शिक्षा के लिए एक अद्वितीय और प्राचीन दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है जिसका भारतीय दर्शन, संस्कृति और समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इस प्रणाली का अध्ययन करके, हम हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता को आकार देने वाले मूल्यों, विश्वासों और प्रथाओं में अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं।

दूसरा, भारतीय शिक्षा प्रणाली आधुनिक समय की शिक्षा के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है, क्योंकि यह छात्रों के शारीरिक,

मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण सहित समग्र विकास पर ज़ोर देती है। यह एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य है जो हमें अकादमिक ज्ञान और परीक्षा के अंकों पर संकीर्ण ध्यान से आगे बढ़ने में मदद कर सकता है जो अक्सर आधुनिक शिक्षा प्रणालियों पर हावी होता है।

तीसरा, भारतीय शिक्षा प्रणाली ने गणित, विज्ञान और ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उदाहरण के लिए, दशमलव प्रणाली का विकास, शून्य, और खगोल विज्ञान, चिकित्सा और धातु विज्ञान में प्रगति, सभी इस शिक्षा प्रणाली के ऋणी हैं। इस प्रणाली का अध्ययन करके, हम प्राचीन भारत की बौद्धिक उपलब्धियों और समकालीन ज्ञान प्रणालियों में उनकी चल रही प्रासंगिकता की बेहतर सराहना कर सकते हैं।

अंत में, भारतीय शिक्षा प्रणाली की खोज से हमें विश्व की शिक्षा प्रणालियों की सांस्कृतिक विविधता को समझने और उसकी सराहना करने में भी मदद मिल सकती है। हर समाज ने शिक्षा के लिए अपना अनूठा दृष्टिकोण विकसित किया है, और इन प्रणालियों का अध्ययन करने से हमें इन अंतरों की सराहना करने और सीखने में मदद मिल सकती है। संक्षेप में, भारतीय शिक्षा प्रणाली अपनी समृद्ध विरासत, आधुनिक शिक्षा के लिए इसकी प्रासंगिकता, ज्ञान में इसके योगदान और सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका के कारण अध्ययन और अन्वेषण के लिए महत्वपूर्ण है।

कुल मिलाकर, भारतीय शिक्षा प्रणाली की एक समृद्ध और विविध विरासत है जिसने शिक्षा, दर्शन, गणित और विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जबकि इस शिक्षा प्रणाली के कुछ पहलू समय के साथ खो गए हैं, इसके कई सिद्धांत और प्रथाएं भारत और दुनिया भर में शिक्षा को प्रभावित करती हैं।

अंत में, भारतीय शिक्षा प्रणाली एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत प्रदान करती है जो आज शिक्षा और नवाचार को प्रेरित कर सकती है। समग्र विकास, चरित्र और नैतिक मूल्यों के साथ-साथ गणित और विज्ञान में इसके योगदान पर प्रणाली का जोर मूल्यवान सबक प्रदान करता है जो व्यक्तियों और समाजों को वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में मदद कर सकता है।

लेख

केरल के कुंबलंगी

विनीता के जी
वाणिज्यिक सहायक

बायोलुमिनसेंट नाइट्स.....(मेरे गांव से)

बिजली की नीली चमक लोगों को कोच्चि में मछली पकड़ने के एक सुप्त गांव, कुंबलंगी के झींगा फार्मों की ओर खींच रही है।

कोच्चि में, वर्तमान में सभी सड़कें कुंबलंगी की ओर जाती हैं। एर्नाकुलम से लगभग 15 किलोमीटर दूर पोस्टकार्ड-सुंदर मछली पकड़ने वाला गाँव, एक प्राकृतिक नियॉन पार्टी की मेजबानी कर रहा है। बैकवाटर के साथ-साथ कतारबद्ध झींगा फार्मों के विशाल खंड बायोल्यूमिनेसेंस में झिलमिला रहे हैं, एक ऐसी घटना जो इसे रात में बिजली के नीले और फ्लोरोसेंट हरे रंग की चमक में चमका देती है।

मलयालम में "कवरु" के रुप में जाना जाता है, यह घटना पिछले कुछ हफ्तों से चल रही है, जिससे कुंबलंगी और आसपास के क्षेत्रों के लिए व्यस्त समय हो रहा है, जिसमें केरल और बाहर से लोग चमकते पानी को देखने के लिए आ रहे हैं। एक बार जब आप कुंबलुंगी पहुंच जाते हैं तो दिशा-निर्देश मांगे और लोग तुरंत पूछ लेते हैं: क्या आप कवरु देखने जा रहे हैं?

स्थानीय लोगों का कहना है कि इंस्टाग्रामर्स द्वारा लोकप्रिय, इस साल भीड़ में वृद्धि हुई है-कुछ ने अनौपचारिक रूप से आगंतुकों की संख्या पांच लाख बताई है। मलयालम सिनेमा की सबसे बड़ी हिट फिल्मों में से एक, कुंबलंगी नाइट्स (2019), जिसमें बायोल्यूमिनेसेंट जल दिखाई देता है, ने भी इस अचानक उत्तेजना में योगदान दिया है।

हालांकि, स्थानीय लोगों के लिए यह कोई असामान्य बात नहीं है। "हमने अपने बढ़ते वर्षों के दौरान यह सब देखा है। गर्मियों में जब हम देशी नाव को रात में पानी में ले जाते हैं और जाल डालते हैं, तो पानी भीतर से जलता है, जैसे कि उसके अंदर सौ प्रकाश बल्ब हों।

शैवाल का फलना

सेंट्रल मरीन फिशरीज रिसर्च इंस्टीट्यूट, कोच्चि के एक अधिकारी के अनुसार, यह घटना डाइनोफ्लैगलेट शैवाल (जिम्नोडिनियम एसपी) के कारण होती है, जिसमें ल्यूमिनेसेंट गुण होते हैं। पानी की सतह पर कोई भी हलचल - लहरें, अचानक उछाल, मछली का तैरना, या पानी की सतह पर गड़बड़ी ल्यूमिनेसेंस को ट्रिगर कर सकती है।

पर्यावरणीय कारकों के संयोजन से एक विशेष क्षेत्र में शैवाल का गुणन होता है। पोषक तत्वों से भरपूर पानी, अनुकूल तापमान और लवणता के कारण शैवाल तेजी से बढ़ते हैं। हवा में परिवर्तन, और वर्तमान पैटर्न, पोषक तत्वों का स्तर या पानी में कोई अन्य कारक शैवाल के गुणन को बदल सकते हैं।

कुंबलंगी - भारत का पहला पर्यावरण पर्यटन गांव - मछली पकड़ने और संबद्ध गतिविधियों पर निर्भर स्थानीय समुदाय के कल्याण के लिए अपनी पर्यटन क्षमता का दोहन करने में सफल रहा है।

हालांकि, "पर्यटकों" की आमद, कुंबलंगी में झींगा किसानों के बीच चिंता बढ़ा रही है। स्थानीय मछली पालकों का कहना है कि चमक देखने के उत्साह में लोग पत्थर, लकड़ी के टुकड़े फेंक रहे हैं, जो उनके खेतों में झींगा को प्रभावित करेगा।

तरंजित हर्षरंजित सिंह खोखर
सहायक प्रबंधक

लेख

सोशल स्टॉक एक्सचेंज को उभारना

वैश्विक कारोबारी माहौल में सोशल स्टॉक एक्सचेंज का मूलमंत्र सामाजिक पूंजी की उपलब्धता को समृद्ध करना है। भारत में "सोशल स्टॉक एक्सचेंज" की अवधारणा को माननीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारामन द्वारा वार्षिक बजट भाषण (2019-2020) के हिस्से के रूप में देश के सामने लाया गया था। अपने वित्तीय बजट भाषण में वित्त मंत्री द्वारा पेश किए गए सोशल स्टॉक एक्सचेंज के इस प्रस्ताव ने स्पष्ट रूप से व्यक्त किया कि एसएसई पर सर्वोच्च शासन भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के हाथों में होगा। बाद में अब, सोशल स्टॉक एक्सचेंज की यह अवधारणा पूरी तरह से आवश्यक कानूनी ढांचे के साथ संरचित है ताकि एसएसई में निवेशकों के लिए सुरक्षा स्थापित की जा सके। सामाजिक उद्यमों और गैर-लाभकारी संगठनों ने अपने प्रमुख उद्देश्यों के रूप में सामाजिक कल्याण की गहरी दृष्टि से प्रेरित होकर अब इक्विटी, ऋण या म्यूचुअल फंड की इकाइयों के रूप में सोशल स्टॉक एक्सचेंज के माध्यम से संभावित निवेशकों को आकर्षित करने की योजना बनाई है। सामाजिक उद्यमों और संभावित निवेशकों के लिए अपने वित्तीय संसाधनों को एकजुट करने हेतु एक विनियमित मंच, अब इस उद्देश्य के लिए संरचित नियामक ढांचे की सख्त निगरानी के तहत पूरा किया गया है।

सामाजिक उद्यम केंद्र या राज्य सरकारों की विकास प्राथमिकताओं में कम निष्पादन दर्ज करने वाले वंचित या कम विशेषाधिकार प्राप्त आबादी वाले क्षेत्रों या प्रदेशों को लक्षित करेगा। सामाजिक कल्याण की दृष्टि वाला एक गैर-लाभकारी संगठन उन संभावित निवेशकों को "ज़ीरो कूपन ज़ीरो प्रिंसिपल" उपकरण जारी करके सोशल स्टॉक एक्सचेंज के ज़रिए धन जुटा सकता है, जो अपने निवेश से कम या कभी-कभी 'कोई लाभ नहीं' की उम्मीद करते हैं। किसी निवेशक को सोशल स्टॉक एक्सचेंज में प्रतिभूतियों के व्यापार के लिए फंड देने वाली प्राथमिक भावना अत्यधिक लाभ उत्तेजना की तुलना में 'सामाजिक भलाई' होगी।

निजी तौर पर शेयर आबंटन में या सार्वजनिक निर्गम द्वारा 'ज़ीरो कूपन ज़ीरो प्रिंसिपल' जारी करने के बावजूद,

म्यूचुअल फंड से दान सोशल स्टॉक एक्सचेंज पर कारोबार किए जाने वाले उपकरणों का रूप भी ले सकता है। सोशल स्टॉक एक्सचेंज का संरचित कानूनी ढांचा भारत में सोशल स्टॉक एक्सचेंजों के ज़रिए प्रतिभूतियों को जारी करके धन प्राप्त करने हेतु "फॉर प्रॉफिट एंटरप्राइज़ेज़" का भी समर्थन करता है। यह व्यक्त किया गया है कि 'फॉर प्रॉफिट एंटरप्रॉइज़ेज़' को खुद को सोशल स्टॉक एक्सचेंजों के साथ पंजीकृत कराने की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय वे वैकल्पिक निवेश कोष और सामाजिक प्रभाव कोष जारी कर सकते हैं या ऋण लिखत भी जारी कर सकते हैं या ऋण लिखत भी जारी कर सकते हैं।

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) 'सामाजिक उद्यम' शब्द को परिभाषित करते समय निश्चित था कि इसमें उन संगठनों को शामिल किया जाए जो संभावित निवेशकों से प्राप्त धन के साथ सकारात्मक सर्मिाजिक प्रभाव बनाने की दृष्टि से स्थापित किए गए हैं। परिभाषित 'सामाजिक प्रभाव' पर एक और विभाजन किया गया, जिसमें एक हिस्से में ट्रस्ट सोसाइटी जैसे 'गैर-लाभकारी संगठनों' और दूसरे हिस्से में 'लाभकारी उद्यमों' को शामिल किया गया। इस प्रकार, सोशल स्टॉक एक्सचेंज सामाजिक उद्यमों के लिए पूंजी की आवश्यकता को पूरा करेगा जो उन्हें सामाजिक कारणों से सशक्त परियोजनाओं को वित्तपोषित करने में सक्षम बनाएगा। पारदर्शिता के लिए अतिरिक्त जगह जोड़ने को उन गुणों के पैकेज के परिवर्धन के रूप में देखा जा सकता है जो सामाजिक स्टॉक एक्सचेंज की पूरी अवधारणा की सेवा कर सकते हैं।

पहले के परिदृश्य में, सामाजिक कल्याण निधि धर्मार्थ या अन्य ट्रस्टों के ज़रिए 'दान' का रूप लेती थी, जो कर कटौती और कुछ अन्य संदर्भ में लाभ का आश्वासन देता था; स्पष्ट रूप से एक बार दिया गया दान स्थिर हो जाता है और दानकर्ता द्वारा इसे कभी भी पुन: प्राप्त नहीं किया जा सकता है। यह इस स्थिति में था; सोशल स्टॉक एक्सचेंज का शुभारंभ भारत सरकार द्वारा किया गया, जिसमें सोशल स्टॉक एक्सचेंज में निवेशक (दाता) के लिए किए गए सामाजिक पूंजी निवेश को वापस लेने की संभावना बढ़ गई। संक्षेप में, 'सामाजिक निवेशक' के पास अपने विकल्प के अनुसार सामाजिक प्रतिभूतियों में निवेश करने के बाद धनराशि निकालने का विकल्प होता है।

निर्विवाद रूप से, भारत सरकार ने देश को वैश्विक व्यापार स्थितियों के साथ दौड़ में बनाए रखने के लिए हमारे देश में सोशल स्टॉक एक्सचेंज की विचारधारा को सक्रिय रूप से तैयार किया है। सेबी के तहत कानूनी नियमों को लागू करने से हमारे देश में एसएसई की पूरी अवधारणा तैयार हुई। वैधानिक नियामक प्राधिकरण – सेबी द्वारा सख्त शासन अब अधिक संभावित सामाजिक निवेशकों को आकर्षित करेगा।

लेख

हमारे दोस्त... बचपन का

त्रिवेणी के के
वरिष्ठ प्रबंधक

गर्मी की छुट्टियाँ थीं। हम हमेशा की तरह छुट्टी का आनंद उठाने के लिए बुआ के घर गए। वहां हम ज़्यादातर समय या तो हीरा के साथ या बुआ की हलवाई की दुकान में बिताते थे। हर समय के दो सबसे पसंदीदा। हीरा की बात करें तो वह बहुत शर्मीली किस्म की थी, वह हमेशा हमारे पीछे चलती थी, वह हमेशा अपनी भाषा में हमसे बात करती थी..., शुरू में हमें उसकी बहुत सी बातें समझ में नहीं आती थीं, लेकिन चलते-चलते हम बहुत अच्छे दोस्त बन गए।

जब फूफा ने हीरा और हमारे (मैं और मेरा भाई) बीच का मज़बूत बंधन देखा, तो उन्होंने हमारी स्कूल खुलने तक हीरा को अपने साथ रखने की अनुमति दी।

हम तीनों बहुत खुश थे। लेकिन पिताजी इस विचार से सहमत नहीं थे क्योंकि हीरा को अपने साथ ले जाना आसान काम नहीं था।

फूफा की सेवानिवृत्ति के बाद उनका मुख्य शौक बकरियां और बिल्लियां पालना था। उनके पास लगभग आठ बकरियां और छह बिल्लियां थीं। उन्होंने एक-एक का नाम रखा था और उनका नाम पुकारने पर वे दौडे दौडे चले आते और हीरा उनमे से एक प्यारी बकरी थी।

पिताजी मेरे भाई के मनाने पर हीरा को अपने साथ लाने को राजी हो गई थी।

जीप में हमारी पहली सवारी थी। बुआ के विशेष दुकान के उत्पादों के साथ, कटहल, आम और नारियल के साथ हीरा के लिए कटहल के पेड़ के पत्तों कों भी जीप मे लोड किया। और शुरू हुई वो खूबसूरत यादगार राइड...

हमारे स्कूल के दिनों में, छुट्टियों को छोड़कर सामान्य दिनों में, दिन का सबसे मज़ेदार समय पावर कट का समय था।

लेकिन छुट्टियों में हमें यह पसंद नहीं क्योंकि हमारे कुछ पसंदीदा टीवी शो देख नहीं पाते थे। पावर कट के दौरान हम क्वार्टर परिसर के बाहर टहलते थे। हीरा भी हमारे साथ साथ टहलती थी। उसको कभी भी क्वार्टर नई जगह नहीं लगा क्योंकि पिछले एक से डेढ़ हफ्ते से वह हमारे साथ थी। जैसे ही हम चारों चले (मैं, पिताजी, मां और मेरा भाई), वह पांचवें व्यक्ति के रूप में हमारे साथ शामिल हुई।

अचानक माँ को एक विचार आया, क्यों न हम अलग होकर चल दें, और देखें कि वह किस के साथ चलती है। मेरी माँ और मैं घर वापस चले गए और पिताजी और मेरा भाई

क्वार्टर के बाहर की ओर चल दिए। जब हमने हीरा को देखा तो हमने देखा कि वह एक बच्चे की तरह रो रही थी जिसे नहीं पता था कि उसे कौन सी टीम चुननी है क्योंकि वह दोनों को प्यार करती है।

फिर जब पिताजी और मेरा भाई हमारे क्वार्टर में वापस चले गए तो वह उनके पीछे पीछे आई और खुशी से मेरी माँ और मेरे पास दौड़ी आई।

हमारे क्वार्टर का माहौल शहर के बीच में एक जंगल जैसा था। बहुत सारे सांप, आवारा कुत्ते आदि थे। हम रात को हीरा को घर के अंदर एक छोटे से स्टोर रूम जैसे जगह पर रखते थे । वहां जाने के लिए उसे एक अलमारी के पास से गुजरना पड़ता है, और वह हर रात सौंदर्य के प्रति इतनी सचेत रहती थी कि जब वह अलमारी के पास से गुजरती थी, तो वह अपने आप को देखती और अपने सौदर्य को निहारती थी। हर शाम जब मेरे पिताजी ऑफिस से लौटते तो वह गेट पर इंतजार करती, उन्हें देखकर वह तब तक रोती रहती जब तक पिताजी उन्हें खाने के लिए कुछ पत्ते नहीं दे देते।

खुशी-खुशी दिन और हफ्ते बीतते गए और हमारी छुट्टी भी खत्म होने वाली थी और बारिश का मौसम भी शुरू हो गया था। बरसात के मौसम के बीच हीरा ने एक छोटे से बच्चे को जन्म दिया। बच्चा परी कथा में एक सुंदर राजकुमारियों की तरह था। लंबी आंखें और चमकदार काली त्वचा के साथ, वह बहुत प्यारी राजकुमारी की तरह लग रही थी.

शुरू में वह कभी मेरे और मेरे भाई के पास नहीं आती थी। वह हमसे डरती थी। वह हमेशा अपनी मां या मेरी मां के साथ रहती थी। लेकिन धीरे-धीरे मेरे, मेरे भाई और नंदिनी (हिरा के बच्चे) के बीच एक अनोखा बंधन बन गया। नंदिनी अब मेरे और मेरे भाई के साथ खेलती थे, साथ-साथ चलते थे। जब हम उसे पास की खुली जगह पर चराने ले जाते तो वह घास खाने के बजाय हमारी गोद में आकर बैठ जाती। छुट्टीयां समाप्त हो गई थीं, नंदिनी अभी बहुत छोटी थी, इसलिए मेरे पिताजी ने हमें कुछ ओर महीनों के लिए बकरियों को अपने साथ रखने की अनुमति दी।

पूजा की छुट्टियां भी हमने साथ में एन्जॉय किया । क्लास खुलने के बाद एक दिन जब हम स्कूल से वापस आए तो पापा ने उन्हें वापस बुआ के घर भेज दिया। उन्होंने स्कूल के दिन को चुना क्योंकि वो हमें रोते नही देखना चाहते थे। उन्होंने हमें बताया कि बकरियों के खाने के लिए घास और पत्ते कम हो रहा है, इसलिए हम उन्हें हमेशा साथ नहीं रख सकते। उन्होंने हमसे वादा किया कि जब क्रिसमस की छुट्टियां आएंगी, तो पूरे दस दिन वह हमें बकरियों के साथ खेलने के लिए बुआ के घर भेज देंगे, और हम क्रिसमस के लिए बेसब्री से इंतजार में थे।

लेकिन नंदिनी के लिए, जब फूफा उसे अन्य बकरियों के साथ खेतों में चराने के लिए ले जाती थी, तो वह उस जगह में जाती थी जहां मेरे भाई के उम्र के बच्चे खेलते थे और देखती थी और रोती थी और उनके पास जाकर मेरे भाई की तलाश करती थी...

आर.अरुण
वरिष्ठ स्टोरकीपर

लेख

मेरी दुर्घटना

मेरी पहली तैनाती उदमपुर शहर में हुई थी जो जम्मू और कश्मीर राज्य में आता है। मैने एमआई-17 हेलीकॉप्टर में प्रशिक्षण लेने के कारण मुझे 153, एचयू,एफ में पहली बार काम करने का मौका प्राप्त हुआ। हमारे प्रशिक्षण के बाद पहली तैनाती होने के कारण मैं बहुत ही उत्साहित था। हम अपने सीनियर्स के साथ हेलीकॉप्टर के तकनीकी विषय सीखते थे और उनके साथ प्रायोगिक काम भी करते थे। हमे जहाज़ के एक-एक विषय पर जानकारी देते थे और उस पर पूरे लगन से कार्य करवाते थे। मेरे काम करने का जोश देख कर हमारे सीनियर्स बहुत ही खुश होते थे और पूरा सहयोग देते थे।

14 अप्रैल 1996 की बात है समय 1330 बज रहा था, मेरे विभाग के प्रभारी ने बुलाया और कहा - तुम भोजन करके वापस आओ। मैंने कुछ नही पूछा और चुप-चाप अपने भोजनालय की ओर चल पड़ा। खाना खाने के बाद तुरन्त ही मैं अपने विभाग में पहुँच गया और अपने प्रभारी को रिपोर्ट किया। उन्होंने कहा हमारा एक जहाज खराब हो गया है जिसे हमें जल्द से जल्द सुधारना है ताकि जहाज़ अपने मिशन का उडान भर सके क्योंकि उस समय जम्मू और कश्मीर में आतंकवादी हमला लगातार होता था।

प्रभारी ने कहा बेटा आज तुमें इस कार्य को करना है क्योंकि सभी सीनियर आउट ऑफ युनिट है, मैं तुम्हें मार्ग दर्शन दूंगा। यह कार्य मुश्किल तो है लेकिन नामुमकिन नहीं है। हमें इस कार्य को कहे गये समय के अंदर करना है। क्योंकि इस जहाज़ का उड़ान आज ही होगा, यह हमारे सी.ओ. का आदेश है । उन्हें इस मिशन को करना ज़रुरी था क्योंकी हमारा फौज फँसा हुआ था ।

मैं अपने एक जूनियर लड़के को लेकर अपना कार्य करने के लिए प्रस्थान हुआ । हमारा कार्य ''हाई प्रेशर पंप को निकालना था, जो बहुत ही बडा कार्य समझा जाता है । यह काम अनुभवी तकनीशियन ही करते है। यह पंप हेलीकॉप्टर के नीचे लगा है इसलिए इसे खोलने के लिए हमे जमीन में लेट कर कार्य करना है । मैंने निर्देशपुस्तिका और टूल्स को लेकर अपना कार्य शुरू किया । हम दोनों ने अपने प्रभारी के नतृत्व में अपना काम कर दिया और उस पंप को उतार दिया था तभी अचानक यह पंप फिसल कर मेरे पेट के ऊपर गिर गया । यह गिरते ही मेरा होश चला गया ।

मुझे होश आया तब मैं हमारे अस्पताल के स्ट्रक्चर पर पड़ा था। मेरा शरीर बिलकुल ठंडा पड गया था । मेरे चारों तरफ लोग खड़े थे और पूछ रहे थे अरुण तुम तो ओके हो, तुम चिन्ता मत करो, हम है । तभी डॉक्टर आए और सभी को दूर हटाया और कहा हम तुम्हें सैनिक अस्पताल भेज रहे हैं जहाँ तुम्हारा इलाज होगा क्योंकि तुम्हारी हालत खराब है। मुझे एंबुलेंस में लेटाया और सहचर में चार लड़के साथ में और कुछ लोग अपने वाहन से अस्पताल पहुँचे । मेरा जूनियर एंबुलेंस में मेरा हाथ पकड़ कर बैठा था और उसके आँखो से आंसू निकल रहे थे । वह चिल्ला कर कह रहा था - सर मेरी वजह से आपको यह घटना हुई है । मुझे माफ करो, माफ करो...

मेरा मुँह सूख गया था और मैं कुछ नहीं बोल पा रहा था । इसी बीच हम अस्पताल पहुँच गए और मुझे आपातकालीन कमरे

में लें गए । डॉक्टर आए और जाँच की, इस बीच मेरी आँखे धीर-धीरे बंद हो रही थी और मेरे कानो में आवाज़ ही आ रही थी । डॉक्टर कह रहा था कि इस लड़के का बहुत खून बह गया है, इसकी हालत गंभीर है । इसका बचना असंभव है, मैं अपनी पूरी कोशिश करूगाँ बाकि ऊपर वाले के हाथ में है । यह सुनते ही मेरे कान में आवाज़ आना बंध हो गया । इसके बाद मेरे साथ क्या हुआ, यह मुझे नहीं मालूम था ।

अचानक नर्स मेरे गाल में मारते हुए कहा अरुण अपनी आँखे खोलो, आँखे खोलो... तब मेरे दिमाग में कई प्रकार के लहरे उठ रही थी, मैं आप लोगो को उस समय कि हालत बयान नहीं कर सकता हूँ । मैं धीरे-धीरे अपने आँखे खोलने लगा । तब मेरे चारों तरफ डॉक्टर और नर्स खड़े थे और कहा - ''हमने तुम्हारा ऑपरेशन कर दिया, तुम ठीक हो'' मैंने अपना सर हिलाया क्योंकि उस समय मुँह से कुछ नहीं बोला जा रहा था, होंठ सूख गए, यह सब मेरा दिमाग कह रहा था और धीरें धीरें मेरी आँखे बंद हो गई मुझे आईसीयू में रखा गया लेकिन मुझे बीच में होश आता था और चला जाता था। नर्स मुझसे पूछती थी मैं उसका जवाब ''हाँ'' या ''न'' पर करता था, लेकिन मेरी आँखे खुलती नहीं थी लेकिन दिमाग में सब कुछ आता था पर मुँह से नहीं बोल सकता था।

चार दिनों के बाद मुझे पूरी तरह होश आ गया और मेरी आँखे पूरी तरह खुल चुकी थी लेकिन गले के नीचे मेरे शरीर को मैं हिला नहीं पा रहा था क्योंकि मेरा शरीर सुन था। मुझे अभी भी उस पल का याद है जब मैं ने नर्स से पानी माँगा, तो वह दौडती हुई मेरे पास आई और कहा भगवान ने हमे बचा लिया । तभी डॉक्टर आए और कहा ''मेरे बेटे तुम अभी खतरे से बाहर आ गये हो क्योंकि हम तुम्हें चार दिनों से निरीक्षण कर रहे है । तुम्हारी हालत बहुत ही खराब थी। भगवान ने तुम्हें बचा लिया । हम आप को एक घंटे के बाद पानी पिलायेंगे । उस दिन मैं अपने शरीर को हिला नहीं पा रहा था क्योंकि मैं वेंटिलेटर पर था । दूसरे दिन मुझे वेंटिलेटर से निकाल दिया गया । यह खबर सुनते ही धीरे-धीरे लोगों का भीड़ उमडने लगी । शाम को मेरा कमाडिंग ऑफिसर मिलने आया और बातचीत करने लगा । बीच में उन्होंने मुझसे पूछा अरुण क्या मैं आप के माता-पिता को बुलवा दूँ मैंने कहा नहीं सर, उन्हें यह दुर्घटना की बात पता नहीं होनी चाहिए क्योंकि वे इस घटना को सहन नहीं कर पाएँगे । तभी मेरे कमाडिंग ऑफिसर ने कहा तुम इस हालत में हो फिर भी तुम अपने माता-पिता को नहीं देखना चाहते हो । मैं ने कहा ''नहीं'' बहादुर लड़के हो । मैं तुम्हें सैल्यूट करता हूँ । अपना ध्यान रखना, यह कहते हुए वे चले गए। पूरे पाँच दिनों के बाद मुझे आईसीयू से कमरे में ले आया गया ।

कमरे में आने के बाद धीर-धीरे मेरे हाथ और पाँव की उंगलियां चलने लगी । तभी डॉक्टर आए, मेरा चेक अप किया और कहा तुम अभी ठीक हों । मैंने पूछा मेरा शरीर क्यो प्रतिक्रिया नहीं कर रहा है । डॉक्टर ने कहा तुम्हारा पेल्विस हड्डियाँ टूट गया है और पेट का ऑपरेशन किया गया क्योंकि आंतरिक रक्त स्राव नहीं रुक रहा था । यह सुनकर मैं घबरा गया - डॉक्टर बोला 'बेटा तुम्हें एक महीना इसी तरह सीधा लेटे रहना है तभी तुम्हारा पेल्विस की हड्डियाँ ठीक हो सकता है । तुम बहुत कोशिश कर रहे हो, पर कभी-कभी मुश्किल हो जाती है । तभी नर्स आई मेरे पास और कहा अरुण मैं तुम्हें एक सच्चाई बताऊँ, बोलो सिस्टर जिस तरह तुम्हें ले आया था वह दृश्य देखने के बाद मैंने नहीं सोचा कि तुम जिन्दा रहोगे क्योंकि तुम्हारा शरीर पूरा खून से लतपत था । खून पानी जैसे बह रहा था यह कहकर उसने मेरे हाथ को जोर से पकड़ लिया । तुम्हारे ऑपरेशन के वक्त दस बोतल खून की जरुरत थी । उस वक्त तुम्हारे लिए लोगों की कतार भी जो अपना खून दान करने के लिए तैयार थे । मैं कहती हूँ ऊपर वाले की मेहरबानी है जो आज तुम जिन्दा हो । तुम्हारा धैर्य को हम सभी नमन करते हैं । मेरी सारी प्रक्रिया बिस्तर में होती थी । एक एक दिन बड़ी कठिनाइयों से गुज़ारा होता था ।

करीब 30 दिन के बाद मैं अपने बिस्तर से उठा और बैसाखियों के सहारे धीरे-धीरे चलने लगा । उधर मेरे माता-पिता बहुत ही व्याकुल थे क्योंकि मैने करीब 40 दिनो से फोन नहीं किया । मैंने एक दिन उनको फोन किया और कहा-सियाचिन ग्लेशियर में फँस गया था । बर्फीले तूफान के कारण सब कुछ नष्ट कर दिया इसलिए आप के साथ संपर्क नहीं कर पाया । करीब 70 दिनों के बाद डॉक्टर ने 30 दिनों का बीमार छुट्टी कर दिया और मुझे अपने एक साथी के साथ अपने घर को रवाना कर दिया । घर में आने कें बाद, मेरी बैसाखियो को देखकर माता-पिता दोनों रोने लगे और कहा-क्या हो गया तुझे । मेरे साथी ने उन्हें तसल्ली से सारी बातें बताई दूसरे दिन वह अपने घर चला गया और मेरे माता-पिता का प्यार और मेरी माँ के भोजन से मैं बहुत ही जल्द बैसाखियों को छोड़ दिया ।

दिन बीत गया और मैं स्वस्थ हो गया...मुझे एहसास हुआ कि मेरा जीवन यहीं समाप्त नहीं होना हैं । मैं उसपर नही चलूँगा जो बाकी सभी ने सोचा.... भगवान ने मुझे एक कारण से बचाया हैं।....

सुरक्षा जागरूकता

आंख की चोट और सुरक्षा

हमारी आंखें हमारी सबसे बडी संपत्तियों में से एक हैं । वे हमें अपने आसपास की दुनिया को देखने की क्षमता देते हैं। अगर हम काम के दौरान अपनी आंखों को चोटों से नहीं बचाते हैं तो हम उस क्षमता को आसानी से खो सकते हैं । आंखों की चोटें कार्यस्थल की सबसे आम चोंटों में से एक हैं । काम पर हमारी आंखों केलिए खतरा पैदा करनेवाले खतरों को खत्म करना या उन्हें दूर करना महत्वपूर्ण है । कार्यस्थल पर हमारी आंखों के कई खतरों को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया जा सकता है, इसलिए आंखों की उचित सुरक्षा भी महत्वपूर्ण है ।

आंख की चोट का सबसे आम कारण -

- **उडती धूल और कचरा –** यह आपके या किसी सहकर्मी द्वारा सैंडिंग या उपकरण के साथ काम करने के कारण हो सकता है जो धूल और कचरे को छोड़ देता है ।
- **खतरनाक रसायनों के साथ संपर्क –** यह रसायनों और अन्य खतरनाक पदार्थों के हवा में उडने और आपकी आंखों के संपर्क में आने के कारण होता है ।
- **अल्ट्रावायलट से संसर्ग –** यह वेल्डिंग के संपर्क में आने या धूप में बाहर काम करने के कारण हो सकता है ।
- **आंख में कुंद आघात –** यह गिरनेवाली वस्तुओं या मशीनरी के कुछ हिस्सों जैसे बाहर निकलनेवाले खतरों के कारण हो सकता है ।
- **आंखों केलिए गर्मी का जोखिम –** यह एक सहकर्मी वेल्डिंग या गर्म हवा का उत्सर्जन करनेवाली मशीनरी के बहुत करीब होने के कारण हो सकता है ।

आंखों की चोटों से बचने का सर्वोत्तम कार्य -

आंखों की सुरक्षा अवश्य पहचानी चहिए।

- अपने कार्य क्षेत्र में और अपने विशिष्ट काम संबंधी कार्यों केलिए **सभी संभावित आंखों की खतरों की पहचान करें।** सुनिश्चित करें कि आंख की चोट को रोकने के उचित सुरक्षा उपाय हैं । यदि कोई सुरक्षा उपाय नहीं है, तो कार्य को रोक दें और समस्या को ठीक करें ।
- आग के स्थान में रहने से बचकर **अपनी आंख में कुछ जाने की संभावना को खत्म या कम करें।** एक त्वरित उदाहरण है कि कार्य क्षेत्र के चारों ओर उड़नेवाले कचरे या धूल के ऊपर की ओर खडा होना ।
- **जरूरत पडने पर हमेशा स्वीकृत सुरक्षा चश्मा, फेस शील्ड या काला चश्मा पहनें ।** विविध प्रकार के पीपीई की आवश्यकता कार्य पर निर्भर करेगी। काम के दौरान आंखों में चोट लगनेवाले हर पांच पीडितों में से तीन ने आंखों की सुरक्षा केलिए कोई सुरक्षा नहीं पहनी हुई थी ।
- **यदि वेल्डिंग गतिविधियां चल रही हैं, उचित नेत्र सुरक्षा पहनें** और सुनिश्चित करें कि क्षेत्र के अन्य कर्मचारियों को अल्ट्रावायलेट जोखिम से बचाने केलिए एक सुरक्षात्मक अवरोध है ।
- **अगर आपकी आंख में कुछ आ जाए तो उसे न रगडें या खरोंचें ।** आंखे को रगड़ने से कॉर्निया में खरोंच आ सकती है जिसके परिणामस्वरूप चोट

लग सकती है । वस्तु को कुल्ला करने केलिए एक आईवॉश स्टेशन या खारा बोतल खोजे।

- **यदि आपकी आंखों में कोई रसायन जाता है, तो अपने नेत्र सुरक्षा को हटा दें यदि कोई हो** और अपनी आंखों को कुल्ला करना शुरू कर दें ।

आंख की सुरक्षा के प्रकार -

सुरक्षा चश्मा न्यूनतम सुरक्षा प्रदान करते हैं और सामान्य कामकाजी परिस्थितियों के लिए होते हैं जहां धूल, चिप्स या उडनेवाले कण खतरा पैदा कर सकते हैं । वे कई प्रकार के किस्मों में उपलब्ध हैं और ढाल या लपेटनेवाले हथियारों के रूप में पार्श्व सुरक्षा प्रदान करते हैं । लेंस में कोहरा रोधी उपचार होना चाहिए ।

सुरक्षा चश्मे की तुलना में **गॉगल्स** उच्च प्रभाव, धूल, और एसिड या रासायनिक छिडकाव से संरक्षण प्रदान करता है।

मोल्डेड गॉगल्स तब उपयुक्त होता है जब श्रमिकों को लगातार छींटे या महीन धूल के संपर्क में लाया जाता है, और उनमें अप्रत्यक्ष रूप से वेंटिंग होना चाहिए । बड़े कणों के साथ काम करते समय कम फॉगिंग के लिए, प्रत्यक्ष वेंट वाले काले चश्मे की सिफारिश की जाती है।

फेस शील्ड पूरे चेहरे को चोट से बचाता है और वे छिडकाव, छिलने, पीसने, रसायनों और रक्त जनित खतरों से उच्चतम प्रभाव संरक्षण और आश्रय प्रदान करते हैं । फेस शील्ड को सुरक्षात्मक चश्मे केलिए द्वितीयक सुरक्षा कवच माना जाता है, इसके बिना सुरक्षा चश्मे या गॉगल्स कभी नहीं पहना जाना चाहिए ।

वेल्डिंग गॉगल्स आर्क वेल्डिंग, गैस वेल्डिंग या जलने पर हानिकारक विकिरण के संपर्क में आने से रोकते हैं । ये रक्षक विभिन्न रंगों में आते हैं, इसलिए कार्य केलिए सही तरह का पहनें । आर्क वेल्डिंग करते समय कभी भी ऑक्सी-एसिटिलीन वेल्डिंग गॉगल्स न पहनें ।

कार्यस्थल पर आंखों की चोटों का उपचार

घाव और छिदाई केलिए :

- प्रभावित आंख पर एक ढाल रखें, जैसे कि एक पेपर कप के तल के समान ।
- चोट को पानी से धोने, लगी हुई वस्तु को हटाने और घायल आंख पर रगडने या दबाव डालने से बचना चाहिए ।
- एस्पिरिन जैसी गैर-स्टेरायडल, सूजन-रोधी दवाएं न लें। वे रक्त को पतला कर सकते हैं और रक्तस्राव को बढा सकते हैं ।
- तुरंत आपातकालीन चिकित्सा सहायता लें ।

आंख में फंसी किसी बाह्य वस्तुओं केलिए :

- आंख रगडने से बचें ।
- घायल आंख की ऊपरी पलक को उठाएं और बार-बार झपकाएं ताकि आंसू कण को बाहर निकाल सकें ।
- अगर कण बाहर नहीं आता है तो चिकित्सकीय सहायता लें ।

रासायनिक जलन केलिए

- आंख को साफ पानी से धोएं और चिकित्सा लें ।

आंख पर आघात केलिए

- दर्द और सूजन को कम करने केलिए कोल्ड कंप्रेस लगाएं, लेकिन सावधान रहें कि दबाव न डालें ।
- दर्द या दृष्टि में गडबडी होने पर किसी नेत्र चिकित्सक या आपातकालीन विभाग से मिलें ।

प्रकाश न जाने पाएं,
आंखों को सुरक्षित रखें !!!

राजभाषा खबरें

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह

आज़ादी के अमृत महोत्सव के भाग के रूप में, भारत सरकार ने सार्वजनिक भागीदारी के साथ भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषावाद को बढ़ावा देने हेतु साथ ही लोगों को विभिन्न मातृभाषाओं के प्रति जागरूक करने के उपलक्ष्य में, अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने हेतु सभी सार्वजनिक उपक्रमों और अन्य प्रतिष्ठानों को सलाह दिए अनुसार, कोचीन शिपयार्ड में मातृभाषा का अमृतोत्सव दिनांक 21.02.2023 को मेटी सम्मेलन कक्ष में कर्मचारियों की अच्छी भागीदारी के साथ अपराहन 01.30 बजे से 04.45 बजे तक आयोजित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य कर्मचारियों को अपनी मातृभाषा में गतिविधियों को अभिव्यक्त करने हेतु एक मंच प्रदान करना था। समारोह का औपचारिक उद्घाटन संपत्तकुमार पी एन, सहायक महाप्रबंधक (प्रशासन) द्वारा किया गया। महोदय ने इस दिन की विशेषता बताते हुए भाषाओं के महत्व को दर्शाते हुए अपनी मातृभाषा को ऊंचा उठाने का आहवान देते हुए अपना भाषण जारी रखा। अपनी मातृभाषा में एक सुंदर कविता पेश करते हुए इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ विभिन्न मातृभाषा, बंगाली, कोंकणी, मराठी, तमिल, तेलुगु आदि भाषाओं के कर्मचारियों ने अपनी-अपनी मातृभाषा में अपने विचार, कविताओं को प्रस्तुत करते हुए किया। तत्पश्चात मलयालम, हिंदी भाषण कार्यक्रम जारी रहा, कुल 5 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। मलयालम और हिंदी कविता पाठ कार्यक्रम में 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया। अंत में मलयालम और हिंदी फिल्मी गीत कार्यक्रम में 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया । इसके दौरान ही प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें कुल 45 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कुल मिलाकर 51 कर्मचारियों ने पूरे जोश के साथ इस समारोह में भाग लिया। कार्यक्रम का परिणाम मतदान के रूप में उपस्थित कर्मचारियों से वोट के रूप में लिया गया। सबसे ज़्यादा वोट मिलने वाले एक कविता पाठ के प्रतिभागी, भाषण के प्रतिभागी, फिल्मी गीत के प्रतिभागी और प्रश्नोत्तरी के प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। सीएसएल में पहली बार आयोजित इस समारोह में प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी से कार्यक्रम शत-प्रतिशत सफल रहा।

मातृभाषा दिवस समारोह-झलकियाँ

राजभाषा संगोष्ठी

स्वर्ण जयंती और विश्व हिंदी दिवस के सिलसिले में साथ ही राजभाषा हिंदी की प्रगति की ओर अपनी प्रतिबद्धता के भाग के रूप में, कोचीन शिपयार्ड द्वारा दिनांक 11.01.2023 (बुधवार) को डॉल्फिन क्लब, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड, कोच्ची में पूर्वाहन 09.00 बजे से अपराहन 04.30 बजे तक कोच्ची के तीनों (बैंक, केंद्र सरकार, सार्वजनिक उपक्रम) नगर राजभाषा कार्यान्वन समितियों को सम्मिलित करके एक राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का औपचारिक उद्घाटन श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के करकमलों से किया गया। संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथिगण के रूप में पधारे डॉ. फ्रांसिस के जेकब, प्रधान महाप्रबंधक, बीएसएनएल एवं अध्यक्ष नराकास (पीएसयू) और डॉ.राधिका देवी डी, उप निदेशक (राजभाषा), हिंदी शिक्षण योजना, बैंगलोर (सेवानिवृत्त) ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी।

संगोष्ठी का शुभारंभ कुमारी वैष्णवी और मरिया के ईश्वर वंदना के साथ हुआ। जो आगे चलकर श्री संपत्त कुमार पी एन, सहायक महाप्रबंधक (प्रशा.) के स्वागत भाषण के साथ जारी रहा। तत्पश्चात सीएसएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, सभी विशिष्ट अतिथिगण व तीनों नराकास समितियों के सचिव मिलकर दीप प्रज्जवलन करके कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया।

अगला हमारे अध्यक्ष व प्रंबध निदेशक, श्री मधु एस नायर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में देश में हिंदी के बढ़ते प्रयोग ने आज यह सिद्ध कर दिया है कि यह भाषा न केवल राजभाषा है, बल्कि राष्ट्रभाषा एवं जनसंपर्क की भाषा भी है। यह भी बताया गया कि राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार एवं हिंदी को जनमानस तक पहुंचाना, हमारा नैतिक दायित्व है। इस दृष्टि से, आज कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड इस संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। वहां उपस्थित बैंक, केंद्र सरकार एवं पीएसयू

के सभी राजभाषा कर्मियों एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को भी उन्होंने बधाई दी जिन्होंने राजभाषा हिंदी को उन्नति की राह में खड़ा करने में और एक अगले स्तर तक ले जाने में अपनी एहम भूमिका निभायी है। वहां उपस्थित नराका समितियों की भी उन्होंने सराहना की। इसके बाद हमारे मुख्य अतिथि डॉ. के फ्रांसिस जेकब, आईटीएस, प्रधान महाप्रबंधक, बीएसएनएल और अध्यक्ष नराकास, कोच्ची (सार्वजनिक उपक्रम) को अपने आशीर्वचनों के लिए आमंत्रित किया गया। उन्होंने भी हिंदी की प्रगति उसके लिए किए जा रहे प्रयासों और शहरों में स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का बढ़ता प्रयास आदि सब की सराहना की और इस आयोजन के लिए कोचीन शिपयार्ड को भी तहे दिल से बधाई दी। अगला डॉ. राधिका देवी डी, सहायक निदेशक (राजभाषा) सेवानिवृत्त को अपने अनुभव के तहत आशीर्वचनों के लिए आमंत्रित किया गया। मैडम जी ने भी अपने कार्यकाल में कार्यरत सभी संस्थानों के अनुभव को बटोरते हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता और एहमियत को दर्शाया और सभी हिंदी कर्मियों को अपनी-अपनी जगह किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की।

संगोष्ठी मुख्य रूप से दो सत्रों में योजनाबद्ध था, प्रथम सत्र का पहला भाग **"राजभाषा हिंदी-मानकीकरण, अनुवाद का व्यावहारिक पक्ष"** पर आधारित था जिसका संचालन डॉ. राधिका देवी डी, उप निदेशक (राजभाषा) से.नि., हिंदी शिक्षण योजना द्वारा किया गया। उन्होंने हिंदी भाषा की वर्तनी में आनेवाली मुश्किलों को समझाते हुए अक्षरों के विभिन्न प्रयोग, विभिन्न भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सार्थकता आदि पर विस्तार से चर्चा किया। भाषा के व्याकरण को बहुत ही सरल तरीके से समझाया गया। उपस्थित सभी प्रतिभागियों ने अपनी-अपनी शंकाओं को दूर किया और इस सत्र से उन्होंने भरपूर लाभ उठाया।

तत्पश्चात कुमारी वैष्णवी के एक सुरीले गीत ने सबके मन को मोह लिया। प्रथम सत्र का दूसरा भाग श्रीमती जानकी एस, प्रबंधक (राजभाषा), आईआरईएल का एक पर्ची प्रस्तुतीकरण था। उन्होंने अपनी लंबी 31 इकतीस वर्षों की उत्कृष्ट सेवा के अनुभवों को साझा किया। कार्यालय में किस प्रकार हिंदी का कार्यान्वयन किया जाना चाहिए। पहले और अब के कार्यान्वयन में क्या अंतर है। इस प्रकार अपने अनुभवों के साथ हिंदी की गतिविधियों को भी हमारे समक्ष साझा किया।

दोपहर के लाजवाब भोजन के बाद द्वितीय सत्र फिर से एक मस्त गाने के साथ शुरू हुआ जिसका आलापन किया श्री ज़हीर जी ने। बाद में, इस सत्र का पहला भाग श्रीमती लीना टी पी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, एफएसआई, के पर्ची प्रस्तुतीकरण के साथ हुआ। उनका विषय था **"कृत्रिम मेधा"** इस विषय पर उन्होंने मशीन लर्निंग को जोड़ते हुए जॉण मैकार्थी के शब्दों को लेते हुए विस्तार से एक प्रस्तुतीकरण पेश किया। कृत्रिम मेधा का अर्थ है एक मशीन में सोचने-समझने और निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना। उसके विभिन्न प्रकारों को दिखाया और उसके अनुप्रयोगों का भी विस्तार से चर्चा किया गया जो प्रतिभागियों केलिए नया अनुभव था।

सत्र का दूसरा भाग **"प्रौद्योगिकी के नए रुझान, हिंदी के परिप्रेक्ष्य में"** विषय पर आधारित था जिसका संचालन डॉ. मधुशील आयिल्यत्त, प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय रिज़र्व बैंक, कोच्ची ने किया। उन्होंने हिंदी को प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में किस प्रकार जोड़ा जा सकता है उसको सविस्तार से समझाया अनुवाद में हम किस प्रकार प्रोद्योगिकी का मदद ले सकते है और कहां-कहां इसका अनुप्रयोग उपलब्ध है आदि की जानकारी प्राप्त की गई। यह बहुत ही ज्ञानवर्धक सत्र था, जिसका सभी प्रतिभागयों ने लाभ उठाया।

आखिरकार में फिर से कुछ मनोरंजन का समय था, एक बहुत ही मस्त एवं सुरीले गीत के साथ सहायक प्रबंधक (प्रशासन) श्री संपत्त कुमार जी पेश हुए जिसका सभी ने एक जुट होकर आनंद उठाया, सब के मन में एक नाया जीवन उबर आया। जिसको जारी रखते हुए एक शानदार नृत्य पेश किया गया। कुमारी आर्द्रा बैजु और कुमारी हरिनंदना जयकुमार ने ज़बरदस्त नृत्य पेश किया दोनों ने मिलकर पूरी संगोष्ठी में जान डाल दिया।

संगोष्ठी के अंत की और बढ़ते हुए समापन समारोह में सभी अतिथियों को मंच पर आमंत्रित किया गया। उप

प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती सरिता जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के समय सभी मुख्य अतिथियों को स्मृतिचिहन श्री संपत्तकुमार जी सहायक महाप्रबंधक (प्रशा.) द्वारा प्रदान किया गया। धन्यवाद ज्ञापन के बाद राष्ट्रगान के साथ संगोष्ठी का भव्य संपन्न हुआ। संगोष्ठी में श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय, कालडी, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, एर्णाकुलम और कोचीन विश्वविद्यालय, कलमश्शेरी से 20 छात्रों ने अपनी

उपस्थिति दर्ज की। एर्णाकुलम जिले के तीनों नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों से 100 से अधिक प्रतिभागियों ने संगोष्ठी में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की। पूरे कार्यक्रम का संचालन हिंदी अनुभाग द्वारा सफल रूप से किया गया।

राजभाषा खबरें

हिंदी पखवाड़ा समारोह - 2022

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता तथा उसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से हर वर्ष सितंबर महीने में कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है। कोचीन शिपयार्ड में हिंदी पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन दिनांक 14 सितंबर 2022 को यानम सभागार में राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक के दौरान अध्यक्ष श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, व अन्य सदस्यों सहित दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया। इस दौरान माननीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल जी का संदेश पढ़ा गया, तत्पश्चात अध्यक्ष द्वारा हिंदी संबंधी प्रेरणाजनक विचारों की घोषणा की गई और शिपयार्ड की हिंदी गतिविधियों को बढ़ाने संबंधी सुझाव भी दिए गए। इस बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी समीक्षा की गई और सुझाव भी प्रदान किया गया। कर्मचारियों, कार्यपालक प्रशिक्षार्थियों, प्रशिक्षार्थियों केलिए इस वर्ष सभी कार्यक्रम समान रूप से किया गया। हिंदी टंकण, सुलेख, गद्यांश वाचन, स्मृति परीक्षा, निबंध लेखन, कविता लेखन, प्रश्नोत्तरी, शब्द पहेली, प्रशासनिक शब्दावली और हिंदी फिल्म गीत (महिला और पुरूषों केलिए अलग-अलग) प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

समापन समारोह

हिंदी पखवाड़ा समारोह का समापन समारोह दिनांक 12 दिसंबर 2022, अपराह्न 1430 बजे को समुद्री इंजीनियरिंग प्रशिक्षण संस्थान (मेटी) के सभा भवन में आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि हमारे अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री मधु एस नायर, उनके साथ श्री बिजोय भास्कर, निदेशक (तकनीकी), श्री जोस वी जे, निदेशक (वित्त) एवं श्री श्रीजित के नारायणन, निदेशक (प्रचालन) उपस्थित थे। समारोह का शुभारंभ वैष्णवी एस और अश्वती वी एच के ईश्वर वंदना के साथ शुरू हुआ जो श्री संपत्त कुमार पी एन, सहायक महाप्रबंधक के स्वागत भाषण के साथ जारी रहा।

कार्यक्रम के दौरान माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी का संदेश श्रीमती सरिता जी, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा

पढ़ा गया। कार्यकम को जारी रखते हुए कंपनी की गृह पत्रिका "सागर रत्न" के चौंदहवें अंक का प्रकाशन श्री मधु एस नायर द्वारा श्री बिजोय भास्कर, निदेशक (तकनीकी) को सौंपते हुए किया गया।

तत्पश्चात हमारे अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री मधु एस नायर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी के बढ़ते आयोमों का ज़िक्र करते हुए हिंदी भाषा जानने की आवश्यकता पर ज़ोर देने की बात को व्यक्त करते हुए बताया कि हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसकी गति बहुत तेज़ी से बढ़ रही है। उन्होंने अपने भाषण में आजादी के अमृत महोत्सव के इस अवसर पर हमें हिंदी की प्रोन्नति केलिए भी आवश्यक कदम उठाने पर ज़ोर दिया। उनकी बातों में, हम सभी को हिंदी भाषा का अधिक से अधिक उपयोग करके, सही मायने में इसको सम्मान दिया जाना है। कई वर्षों से राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु कोच्ची टॉलिक से प्रथम पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है, साथ ही पिछले तीन वर्षों से भारत सरकार के राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा रहा

है। हिंदी पखवाडा समारोह के सिलसिले में कर्मचारियों एवं उनके परिवार जनों केलिए और साथ ही साथ स्कूली छात्रों केलिए भी विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन सफल ढंग से किया गया जो कि एक सराहनीय कदम है। इस समारोह में पुरस्कृत कर्मचारियों, एवं उनके परिवार जनों और स्कूली छात्रों को भी अध्यक्ष महोदय द्वारा सराहना दी। राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए राजभाषा अनुभाग द्वारा किए जा रहे सभी प्रयासों के लिए भी बधाई दी। हिंदी भाषा को अपने प्रेरणात्मक शब्दों के साथ बढ़ावा देते हुए उन्होंने अपना भाषण संपन्न किया। कार्यक्रम को एक छोटा-सा विराम देते हुए कुमारी इशिता सजित ने अपने मधुर संगीत से वहाँ उपस्थित लोगों का मन बहलाया।

समापन समारोह के अवसर पर, सभी विजेता परिवारजनों एवं बच्चों साथ ही देशभक्ति गीत प्रतियोगिता के विजेता स्कूलों को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के करकमलों से पुरस्कार प्रदान किया गया। हिंदी का उत्कृष्ट कार्यान्वयन पुरस्कार इस वर्ष कंपनी सचिव के कार्यालय को प्रदान किया गया। इस पुरस्कार वितरण के तुरंत बाद एक और विराम लेते हुए हमारे देशभक्ति गीत प्रतियोगिता के विजेता सेंट तेरेसास स्कूल द्वारा अपना गीत प्रस्तुत किया गया जिसने सबके मन को मोह लिया। कार्यक्रम के अंत की ओर बढ़ते

हुए हमारी उप प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती सरिता जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के बाद राष्ट्रगान के साथ समापन समारोह का भव्य संपन्न हुआ। पूरे कार्यक्रम का संचालन हिंदी कक्ष द्वारा सफल रूप से किया गया।

उत्कृष्ट विभाग - कंपनी सचिवालय

राजभाषा खबरें

हिंदी पखवाड़ा विशेष कार्यक्रम-परिवारजनों के लिए

- परिवार के बीच में भी हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु कर्मचारियों के पति/पत्नी केलिए हिंदी में खिचडी एवं गीत प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। साथ ही, कर्मचारियों के बच्चों केलिए स्मृति परीक्षा, सुलेख, फिल्म गीत, प्रश्नोत्तरी और कविता पाठ जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। परिवारजनों ने बडी उमंग के साथ प्रतियोगिताओं में अपनी उपस्थिति दर्ज की।

हिंदी पखवाड़ा विशेष कार्यक्रम-स्कूली छात्रों के लिए

- छात्रों के बीच हिंदी भाषा को प्रसारित करने के उद्देश्य से, एर्णाकुलम जिले के सभी सरकारी स्कूलों के छात्रों केलिए देशभक्ति गीत प्रतियोगिता आयोजित की गई। 12 स्कूलों ने अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की और कुल 100 से अधिक छात्रों ने प्रतियोगिता में बढ-चढ़कर भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार क्रमश: **सेंट तेरेसास सीजीएचएसएस, एर्णाकुलम, टीडीएचएस मट्टांचेरी, जीजीएचएसएस, तृपूणित्तुरा और सेंट एंटणी एचएसएस, कच्चेरीपडी ने हासिल किया।**

देशभक्ति गीत प्रतियोगिता में भाग लिए छात्र

हिंदी पखवाड़ा-कर्मचारियों के लिए पुरस्कार

हिंदी पखवाड़ा-कर्मचारियों के लिए पुरस्कार

राजभाषा खबरें

राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम

कार्यपालकों के बीच राजभाषा प्रबंधन के संबंध में एक अवबोध सृजित करने के उद्देश्य से दिनांक 19 अप्रैल 2022 को वरिष्ठ प्रबंधक और प्रबंधक के स्तर के कार्यपालकों केलिए एक राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्रीमती बिनु टी एस, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने कक्षा का संचालन किया। उन्होंने बड़े रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक तरीके से राजभाषा अधिनियम, नियम और तत्संबंधी विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डाला। हिंदी की प्रमुखता को बताते हुए संविधान में हिंदी के दर्जे को छूते हुए राजभाषा तक की यात्रा का सफल चित्रण किया साथ ही, कार्यालय में राजभाषा हिंदी के महत्व, राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति कार्यपालकों का उत्तरदायित्व, राजभाषा नीति, वार्षिक कार्यक्रम आदि सभी बिंदुओं पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। राजभाषा संबंधी प्रावधानों को छोटा-छोटा नुस्का बनाकर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से पेश किया गया। कार्यालय में कार्यपालकों को किस प्रकार अपने सहकर्मियों को राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहित करना है इस पर भी विचार किया गया। आगे बढ़ते हुए उन्होंने हिंदी भाषा के व्याकरण से सभी भागीदारों को अवगत कराया। लिंग पहचानने के कुछ सरल तरीकों को समझाया। रोचक कार्यशीटों से भागीदारों को कुछ समय के लिए व्यस्त रखा।

सभी भागीदारों को अपना काम हिंदी में करने हेतु प्रेरित किया गया। भागीदारों ने इस संबंध में अनेक प्रश्नों को उठाया जिसका सफल हल निकाला गया। सभी प्रतिभागियों ने अपने मन की बात बताई और यह विश्वास दिलाया कि उनसे जो बन पड़ता है वे करेंगे। सत्र में कुल मिलाकर सत्ताईस प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी से कार्यक्रम संपन्न हुआ। यह राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था।

राजभाषा कौशल संवर्धन कार्यशाला

नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति, कोच्ची एवं हिंदी विभाग श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालड़ी के संयुक्त तत्वावधान में स्नातकोत्तर, एम फिल एवं शोध छात्रों के लिए दिनांक 24.02.2023 (शुक्रवार) को पूर्वाहन 10.00 बजे से अपराहन 12.45 बजे तक आयोजित राजभाषा कौशल संवर्धन कार्यशाला में कोचीन शिपयार्ड द्वारा एक सत्र चलाया गया जिसका विषय था-**कार्यालयीन हिंदी - सरल टिप्पणी एवं मसौदा लेखन**। संगोष्ठी का उद्घाटन कॉलेज प्रधानाध्यापिका द्वारा किया गया। हिंदी विभाग की विभागाध्यक्ष, नराकास उपक्रम की सचिव श्रीमती शीला एम सी आदि भी उपस्थित थीं। कक्षा का संचालन दो सत्रों में किया गया पर्वाहन 10.00 बजे से 11.30 बजे तक और 11.45 बजे से 12.45 बजे तक। कक्षा में पूरे 51 छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया । कक्षा वाकई में छात्रों के लिए बहुत ही लाभप्रद था.

राजभाषा खबरें

कॉलेज छात्रों केलिए इंटर्नशिप कार्यक्रम

छात्रों को कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के महत्व और प्रमुखता को समझाने और भाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने में मदद करने हेतु एक विशेष कदम के रूप में, कार्यालय में राजभाषा हिंदी में इंटर्नशिप कार्यक्रम की शुरूआत की गई। एम ए हिंदी और अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा करनेवाले छात्रों को इसमें शामिल किया गया। अभी तक कुसाट से दो छात्रों और दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, एर्णाकुलम से सात छात्रों और महाराजास कॉलेज एर्णाकुलम से तीन छात्रों ने 15 दिनों केलिए शिपयार्ड में हिंदी इंटर्नशिप कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न किया।

कुसाट के छात्रों केलिए राजभाषा अवबोधन कार्यक्रम

छात्रों के बीच राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु कुसाट के स्नातकोत्तर हिंदी छात्रों केलिए एक राजभाषा अवबोधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती लिजा जी एस, हिंदी अनुवादक द्वारा बखूबी किया गया। उन्होंने एक पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के ज़रिए कार्यालयीन हिंदी के संबंध में संक्षिप्त जानकारी छात्रों को प्रदान किया। यह कार्यक्रम छात्रों केलिए बहुत ही लाभदायक था। कुल 20 छात्रों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया।

बोलचाल की हिंदी कक्षाएं

सीएसएल के कर्मचारियों केलिए जून 2022 से दो महीने केलिए बोलचाल की हिंदी में प्रशिक्षण कक्षाओं की शुरूआत की गई। कक्षाएं हफ्ते में दो दिन, दो घंटे केलिए आयोजित की गईं। कुल 33 कर्मचारीगण प्रशिक्षण सत्र में सफल रूप से भाग लिया।

राजभाषा खबरें

विद्यालयों में हिंदी पुस्तकों का योगदान

एक सामाजिक प्रतिबद्धता के रूप में, स्कूली छात्रों को हिंदी भाषा की ओर अधिक आकर्षित करने केलिए, सरकारी स्कूलों में हिंदी पुस्तकें प्रदान करने के कार्य की शुरूआत की गई। प्रथम चरण के रूप में, मार्च 2023 महीने में सेंट मेरीस हाईस्कूल, कंडनाड, एर्णाकुलम और वोकेशनल हायर सेकेंडरी स्कूल, इरिम्पनम में 5000 रुपए की हिंदी पुस्तके हरेक स्कूल को प्रदान किया गया।

नकद पुरस्कार योजना

- कार्यालयीन काम हिंदी में करने हेतु वर्ष के दौरान नकद पुरस्कार योजना में कुल 86 कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
- दसवीं कक्षा में हिंदी में उच्च अंक प्राप्त करने से संबंधित नकद पुरस्कार योजना में कुल 29 कर्मचारियों के बच्चों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

हिंदी पुस्तकालय

कंपनी की हिंदी पुस्तकालय में हर वर्ष विविध प्रकार की हिंदी पुस्तकें, सीडियां आदि खरीदी जाती है। वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारितानुसार, कुल खर्च के 50% हिंदी पुस्तकों की खरीदी केलिए किया जाता है। वर्ष के दौरान कुल 18,550 रुपए में से कुल 10,000 रुपए की हिंदी पुस्तकों की खरीदी की गई।

राजभाषा खबरें

हिंदी कार्यशाला

अप्रैल - जून तिमाही की एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 22.06.2022 ऑनलाइन की गई। सभी प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से कार्यशाला में भाग लिया और अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त की।

जुलाई-सितंबर तिमाही की एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 09.08.2022 को मुख्य कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई। सभी भागीदारों ने सक्रिय रूप से कार्यशाला में भाग लिया।

अक्तूबर-दिसंबर तिमाही की एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 06.12.2022 को आयोजित की गई। सभी प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से कार्यशाला में भाग लिया ।

जनवरी-मार्च तिमाही की एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला दिनांक 20.02.2023 को आयोजित की गई। कार्यशाला में नामित सभी भागीदारों ने इस कार्यक्रम को शत-प्रतिशत सफल बनाया।

कंपनी खबरें

माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा कोचीन शिपयार्ड में निर्मित कोच्ची जल मेट्रो का उद्घाटन

भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने दिनांक 25 अप्रैल 2023 को भारत की पहली जल मेट्रो का उद्घाटन किया, जो बैटरी चालित इलेक्ट्रिक हाइब्रिड नौकाओं के माध्यम से मलबार तट में शहर के चारों ओर 10 द्वीपों को जोडेगी। यह शून्य कार्बन उत्सर्जन एमीशन मिशन की ओर बढ़ता कदम है। यह 747 करोड़ रुपये की परियोजना का एक हिस्सा है जो कोच्चि वाटर मेट्रो लिमिटेड द्वारा संचालित है। 819 करोड़ रूपये के कुल परिव्यय के साथ, परियोजना के प्रमुख हिस्से को भारत-जर्मन वित्तीय सहयोग के तहत जर्मन फंडिंग एजेंसी, केएफडब्ल्यू के साथ 85 मिलियन यूरो (579 करोड़ रूपये) के दीर्घकालिक ऋण समझौते के माध्यम से वित्तपोषित किया गया है ।

मेट्रो रेल कोच्ची केलिए सीएसएल द्वारा निर्मित ऊर्जा कुशल और पर्यावरण अनुकूल नौकाएं देश के जल परिवहन को पुनर्परिभाषित करती हैं। यह कोच्ची केलिए निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित करेगा। इससे जल परिवहन में बडी क्रांति आएगी और राज्य के पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। समग्र परियोजना में कुल 38 टर्मिनलों के साथ 78 इलेक्ट्रिक नौकाएं शामिल हैं। पहले चरण की सेवा हाई कोर्ट-वाइपिन टर्मिनल से वैटिला-काक्कनाड टर्मिनल तक शुरू होगी। यह परियोजना 747 करोड रूपए की है जिसने 78 कि.मी. तक फैले द्वीपों को जोडनेवाली 15 मार्गों की पहचान की है। जल महानगरों के पतवार को 10 समुद्री मील की गति (18 कि.मी. प्रति घंटे) केलिए डिज़ाइन किया गया है जो नौकाओं की पुरानी प्रणाली की तुलना में काफी तेज है । जलमेट्रो आधुनिक सुविधाओं, बेहतर सुरक्षा उपायों के साथ किसी भी अन्य नौका या पारंपरिक नाव सेवा की तरह जल निकायों पर काम करेगी साथ ही, मुख्य रूप से कोच्ची में प्रदूषण और यातायात की भीड को कम करेगा। यह एक किफायती टैग के साथ एक विशिष्ट स्पर्श के साथ एक सामाजिक रूप से समावेशी परिवहन प्रणाली होगी।

आत्मनिर्भर भारत : भारतीय नौसेना केलिए अगली पीढ़ी के छह मिसाइल जलयानों केलिए अनुबंध पर हस्ताक्षर

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के साथ 9,805 करोड रुपए की लागत से छह अगली पीढ़ी के मिसाइल जलयान के अधिग्रहण केलिए अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए । पोतों की सुपुर्दगी मार्च 2027 से शुरू होनेवाले हैं। एनजीएमवी गुप्तता, उच्च गति और आक्रामक क्षमतावाले भारी हथियारों से लैस युद्ध पोत होंगे। पोतों की प्राथमिक भूमिका दुश्मन के युद्धपोतों, व्यापारियों और ज़मीनी ठिकानों के खिलाफ आक्रामक क्षमता प्रदान करना होगा।

ये जलयान समुद्री स्ट्राइक ऑपरेशन, एंटी सरफेस वारफेयर ऑपरेशन करने में सक्षम होंगे और विशेष रूप से चोक पॉइंटस पर दुश्मन के जलयान केलिए समुद्री इनकार का एक शक्तिशाली समाधन होगा। रक्षात्मक भूमिका में, इन जलयानों को स्थानीय नौसेना रक्षा संचालन और अपतटीय विकास क्षेत्र के समुद्री रक्षा केलिए नियोजित किया जाएगा। इन जलयानों के निर्माण से नौ वर्षों की अवधि में 45 लाख मानव-दिवस का रोज़गार सृजित होगा। इन जलयानों के स्वदेशी निर्माण से एमएसएमई सहित भारतीय पोत निर्माण और संबद्ध उद्योगों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा मिलेगा। स्वदेशी निर्माताओं से प्राप्त अधिकांश उपकरणों और प्रणालियों के साथ, ये पोत "आत्मनिर्भर भारत" के गौरवशाली ध्वजवाहक होंगे।

हरित क्रांति की ओर सीएसएल :

शून्य उत्सर्जन फीडर कंटेनर का निर्माण

सीएसएल ने सामस्किप के साथ दुनिया के पहले शून्य उत्सर्जन फीडर कंटेनर पोत के निर्माण केलिए नॉर्वेजियन ऑडर पर हस्ताक्षर किया हैं। सीएसएल 2 ऐसे हाइड्रोजन ईंधन सेल संचालित जहाज़ों को डिज़ाइन और वितरित करेगा जिसमें 2 और विकल्प होंगे। इन जहाज़ों का उद्देश्य यूरोपीय बाज़ार की सेवा करना है। यह नॉर्वेजियन सरकार के हरित वित्त पोषण कार्यक्रम के तहत एक महत्वाकांक्षी परियोजना है जिसका उद्देश्य स्थायी भविष्य की प्रौद्योगिकियों को अपनाकर उत्सर्जन मुक्त परिवहन समाधान है।

भारत की माननीया राष्ट्रपति का आईएनएस विक्रांत पर दौरा

भारत की माननीया राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड का दौरा किया और भारत के पहले स्वदेशी वायुयान वाहक आईएनएस विक्रांत में सवार हुई। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने आईएनएस विक्रांत का दौरा किया और बोर्ड पर अधिकारियों और नाविकों के साथ बातचीत की। राष्ट्रपति ने कहा कि स्वदेश निर्मित आधुनिक वायुयान वाहक पोत भारत के आत्मनिर्भर भारत की दिशा में आगे बढने का प्रमाण है। राष्ट्रपति ने भारतीय नौसेना की पूरी टीम, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड और आईएनएस विक्रांत के निर्माण से जुडे सभी लोगों का बधाई दी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आईएनएस विक्रांत हमारे समुद्री हितों की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

श्रेष्ठ सुरक्षा पुरस्कार

श्रम मंत्री वी शिवनकुट्टी से श्रेष्ठ सुरक्षा पुरस्कार स्वीकार करते हुए टीम सीएसएल । सीएसएल ने राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद, केरल में भी कई पुरस्कार जीते। सर्वश्रेष्ठ सुरक्षा समिति और सुरक्षा पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम जीते। टेबल टॉप मॉक ड्रिल, सुरक्षा प्रश्नोत्तरी और सुरक्षा स्लोग्न में दूसरा पुरस्कार जीता ।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस –2023

डिजिट ऑल : लैंगिक समानता के लिए नवाचार व तकनीक का महत्व

वर्ष 2023 के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन कोचीन शिपयार्ड अधिकारियों के कल्याण केंद्र (डॉल्फिन क्लब) में दिनांक 08.06.2023 को पूर्वाह्न 8.30 बजे से अपराह्न 12.00 बजे तक किया गया, जिसमें 320 से अधिक महिला कर्मियों (अधिकारियों, कामगारों, अनुबंध कर्मियों, प्रशिक्षार्थियों) ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमती अंजना के आर, महाप्रबंधक (डिजाइन), विप्स के अध्यक्ष के स्वागत भाषण के साथ हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष सीएसएल के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री मधु एस नायर और मुख्य अतिथि डॉ. मिनी उलनाड (कुसाट) ने दीप प्रज्ज्वलन करके उद्घाटन किया साथ ही एक पवर पाइंट प्रस्तुतीकरण भी दिखाया गया। तत्पश्चात श्रीमती मेरी रंजित एब्रहाम, उप महाप्रबंधक (आंतरिक लेखापरीक्षा), विप्स के उपाध्यक्ष ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए राष्ट्रगान के साथ उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। चाय के विराम के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शुरुआत हुई। तिरुवातिरा, ओपन्ना, नाटक, नृत्य, फिल्मी गीत आदि कार्यक्रमों मे लगभग सभी महिला कर्मचारियों ने पूरे जोश के साथ भाग लिया।

राष्ट्रीय एकता दिवस

सीएसएल ने राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया। श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, सीएसएल, श्री बिजोय भास्कर, निदेशक (तक), सीएसएल और श्रीमती एस उमा वेंकटेशन, आईआरएस, मुख्य सतर्कता अधिकारी, सीएसएल ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह की शुरूआत को चिन्हित करने केलिए सत्यिनष्ठा शपथ के साथ-साथ हिंदी और अंग्रेजी दोनों में शपथ दिलाई।

स्वस्थ शरीर-स्वस्थ दिमाग

सीएसएल द्वारा "एक स्वस्थ दिमाग केलिए तीन मिनट"- एक पहल - जिसके माध्यम से सीएसएल के सभी कर्मचारी काम शुरू करने से पहले उत्साहित होंगे एवं उनका हौसला बढ़ेंगा। यह कदम स्वस्थ शरीर और स्वस्थ दिमाग केलिए व्यायाम को प्रोत्साहित करता है।

प्रशासनिक शब्दावली

विधि - प्रारूप

1. एतद्द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियम किया जाता है.....
   It is hereby enacted as follows.....
2. परंतु सरकार द्वारा या उसके निदेशाधीन किए गए किसी भी आदेश के विरुद्ध कोई भी अपील न हो सकेगी।
   Provided that no appeal shall lie against any order made by, or under the direction of the Government.
3. अपील निपटाने में अपील अधिकारी ऐसी प्रक्रिया का अनुकरण करेगा, जैसी विहित की जाए।
   In disposing of an appeal the appellate authority shall follow such procedure as may be prescribed.
4. केंद्रीय परिषद एक सचिव नियुक्त कर सकेगी, जो यदि केंद्रीय परिषद् द्वारा ऐसा विनिश्चय किया जाए तो कोषपाल के रूप में भी कार्य कर सकेगा।
   The central Council may appoint a secretary who may also, if so decided by the Central Council, act as Treasurer.
5. इस संहिता में, जब तक कि विषय या संदर्भ से भिन्न आशय प्रतीत न हों, निम्नलिखित शब्दों और पदों के निम्नलिखित अर्थ है:-
   In this code, the following words and expressions have the following meanings, unless a different intention appears from the subject or context.
6. "निगम शेयर" के बारे में यह समझा जाएगा कि उसके अंतर्गत स्टाक, डिबेंचर स्टाक, डिबेंचर या बंधपत्र है।
   "Share in a corporation" shall be deemed to include stock, debenture stock, debentures or bonds.
7. केंद्रीय सरकार निम्नलिखित सब प्रयोजनों या उसमें से किसी केलिए ऐसे नियम जो इस अधिनियम से संगत हो, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा बना सकेगी, अर्थात्
   The Central Government may, by notification in the Official Gazette, make rules consistent with this Act for all or any of the following Purposes, namely.
8. कोई धन राशि जो आयोग को किसी अभिव्यक्त या विवक्षित् करार के अधीन या किसी भी अन्य प्रकार से संदेय हो, उसी रीति से वसूल की जा सकेगी जैसे भू-राजस्व का बकाया वसूल किया जाता है।
   Any sum payable to the Commission under any agreement express or implied, or otherwise howsoever, may be recovered in the same manner as an arrear of land revenue.
9. निगम के लेखा/लेखाओं की लेखा परीक्षा केंद्रीय सरकार द्वारा नियुक्त संपरीक्षकों द्वारा ऐसे समयों पर और ऐसी रीति से की जाएगी जो विहित की जाए।
   The accounts of the Corporation shall be audited, at such times and in such manner as amy be prescribed, by auditors appointed by the Central Government.
10. केंद्रीय सरकार द्वारा यथा निर्धारित लेखा परीक्षा खर्च निगम की निधियों में से दिया जाएगा।
    The Cost of the audit as determined by the Central Government shall be paid out of the Corporation.

बोलचाल की हिंदी

दिशाएं

पूर्व	-	EAST	नीचे	-	BELOW
पश्चिम	-	WEST	सामने	-	IN FRONT OF
उत्तर	-	NORTH	पीछे	-	AT THE BACK
दक्षिण	-	SOUTH	मध्य, बीच	-	CENTRE
ओर	-	SIDE	भीतर	-	IN
दाएं	-	LEFT	बाहर	-	OUT
बाएं	-	RIGHT	गोल	-	CIRCLE
ऊपर	-	ABOVE			

शरीर के अंग

शरीर	-	BODY	गर्दन	-	NECK
सिर	-	HEAD	छाती	-	CHEST
मुख	-	FACE	कमर	-	WAIST
नाक	-	NOSE	हाथ	-	HAND
आँख	-	EYE	जाँघ	-	THIGH
कान	-	EAR	टाँग	-	LEG
मुँह	-	MOUTH, FACE	पीठ	-	BACK
दाँत	-	TEETH	उंगली	-	FINGER
जीभ	-	TONGUE	नाखून	-	NAIL
होंठ	-	LIP	बाल	-	HAIR

दो शब्द वाले वाक्य

पानी लाओ	-	Bring Water	उधर चलो	-	Go There
फल खाओ	-	Eat Fruit	इधर आओ	-	Come Here
घर जाओ	-	Go Home	काम करो	-	Do the work
मुँह देखो	-	See the face	पाठ पढ़ो	-	Read the Lessons
सच बोलो	-	Speak the truth	आँख खोलो	-	Open the eyes
सबेरे उठो	-	Rise up in the morning	खत लिखो	-	Write the Letter
चाय पिओ	-	Drink Tea	घोड़ा खरीदो	-	Purchase the Hours
चुप रहो	-	Keep Quiet	जल्दी भागो	-	Run Quickly
पैसा दो	-	Give Money			

बोलचाल की हिंदी

घड़ी

अब कितने बजे हैं?	-	What is the time now?
एक बजे हैं	-	It is one O'clock
दो बजे हैं	-	It is two O'clock
आठ बजे हैं	-	It is eight O'clock
सवा बजे हैं	-	It is quarter past one
सवा दो बजे हैं	-	It is quarter past two
सवा तीन बजे हैं	-	It is quarter past three
डेढ़ बजे हैं	-	It is half past one
ढाई बजे हैं	-	It is half past two
साढ़े तीन बजे हैं	-	It is half past three
साढ़े चार बजे हैं	-	It is half past four
पौने बजे हैं	-	It is quarter to one
पौने तीन बजे हैं	-	It is quarter to three
पौने दो बजे हैं	-	It is quarter to two
दो बजकर पाँच मिनट हैं	-	It is five minutes past two
दो बज़ते पाँच मिनट हैं	-	It is five minutes to two
कितने बजे?	-	At what time?
एक बजे	-	At one O'clock
दो बजे	-	At two O'clock
पौने बजे	-	At 12.45
सवा बजे	-	At 1.15

चित्र रचनाएँ

अर्जव के. श्रीधरन
उण्णिकृष्णन के एस का सुपुत्र

संघमित्रा
अनीष वी आर की सुपुत्री

अंजनाकृष्णा
प्रविता गोपाल की सुपुत्री

कृष्णप्रिया ए
प्रिया ए आर की सुपुत्री

वैष्णवी रमेश
रमेश पी एस की सुपुत्री

चित्र रचनाएँ

अभिराम ए
प्रिया ए आर का सुपुत्र

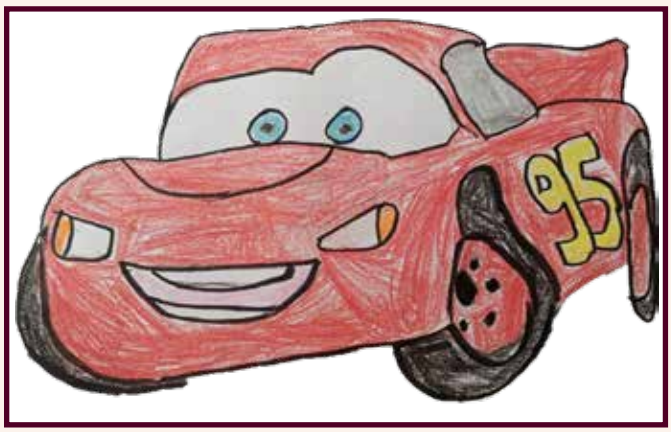

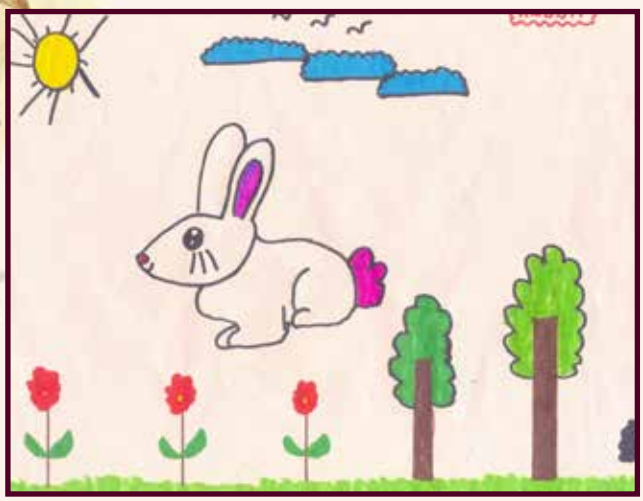

निव्या के बी
सरिता जी की सुपुत्री

ऐंजलीना जॉय
अलीना नीतू साबिन की सुपुत्री

प्रणव एन
मनोजकुमार एन का सुपुत्र

चित्र रचनाएँ

गौतम कृष्णा एम
विनिता के जी का सुपुत्र

परवाना एन
मनोजकुमार एन की सुपुत्री

अलन माधव यू एन
नीतू के का सुपुत्र

इथान इमान्युल सोल
जोसफ सोल के जी का सुपुत्र

अमेया टिलसन
टिलसन थॉमस की सुपुत्री

चित्र रचनाएँ

आलिया अरुण
अरुण कुमार के के की सुपुत्री

अमिता विजित
हष्ना पी एम की सुपुत्री

इशानी विनोद
कीर्ति आर की सुपुत्री

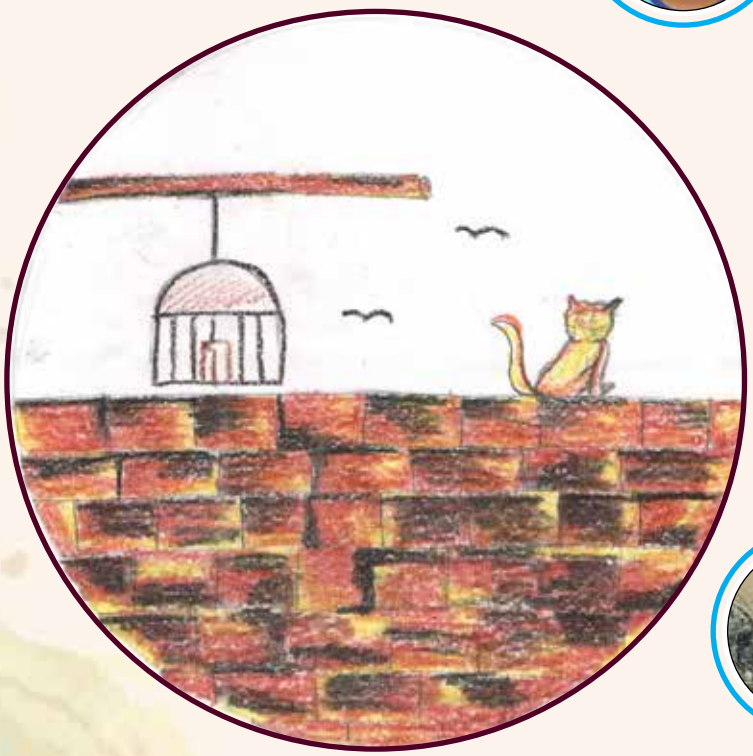

अक्षता आर
रामदास एस की सुपुत्री

जी ई कमलेश
इलयराजा जी का सुपुत्र

शब्द खोज

रॉ	ऋ	मु	ळ	ठ	झु	भ	याँ	तु	गू	नृ	ज्ञ
च	श	नी	ख	ध	हे	फ	अ	गै	पो	ई	ञ
तौ	इ	सं	ञ	खै	क्ष	ति	रं	गा	पि	थ	ए
त्र	ङ	छ	स्कृ	ऑ	थ	ह	ण	ष	फ	ई	ठ
द	रो	औ	स्कृ	त	प	ब	ऊ	प	हू	का	दी
ङ	सा	ड	त	न	य	स	क	न	आ	ज़ा	का
द	ऊ	र	ज	इ	गं	र	म	ण	आ	म	र
य	उ	झं	डा	ऋ	गा	ल	ल	श्र	पा	प्र	ऐ
के	आ	ले	ट	प	च	श	क्ष	म	ति	पि	इ
दि	रो	टा	वा	भा	र	त	गे	ज्ञा	श	थ	का
कु	जे	वी	ए	ली	रो	जे	ह	ई	झ	ऊ	औ
औ	लै	हा	थी	सा	से	रे	स	से	ष	का	ब

1. प्रतिज्ञा
2. झंडा
3. संस्कृत
4. भारत
5. आज़ादी
6. आम
7. गंगा
8. तिरंगा
9. कमल
10. हाथी

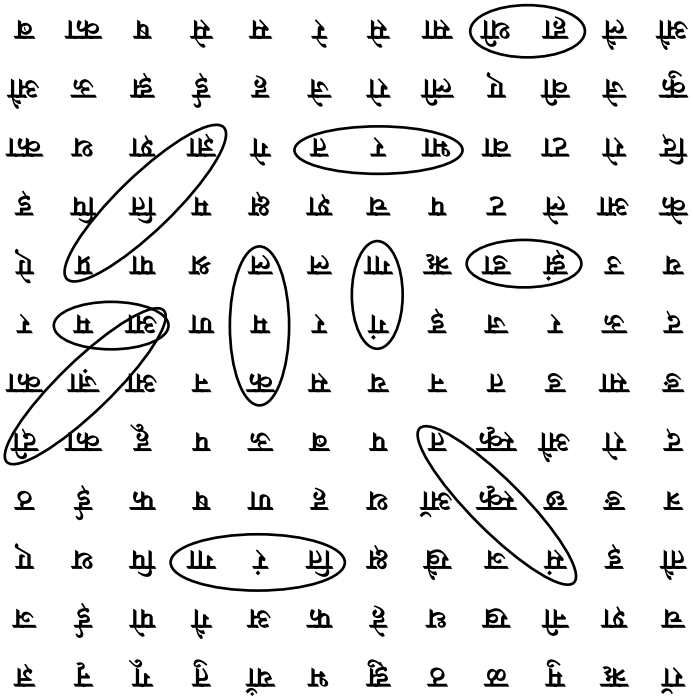

एथलेटिक्स चैंपियनशिप, 2023

अध्यक्ष महोदय श्री मधु एस नायर के साथ सिजार एम बी, मुरुगन ए एम, नीता जोसफ टी, जैक्सन सी जे, षाजी जॉन, विनु के आर, सतोष के एस और अजित ए जिन्होंने 43वीं नेशनल मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप, 2023, कोलकाता में सफल रूप से भाग लिया। सिजार एम बी, नीता जोसफ टी, जैक्सन सी जे और विनु के आर विजयी हुए।

COCHIN SHIPYARD